



बाइजिब कथा बाइजिब माजटैन  
**जन जन विचार**

जन जन की बात जन जन तक

# जन जन विचार



WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER

Language : Hindi, Assamese & English

WEBSITE : www.janjanvichar.in

VOICE OF ALL, FOR ALL

WEEKLY

**JAN JAN VICHAR**

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 17 July 2026 :: Year-1 Vol-27 Issue-6 :: शुक्रवार 17 जुलाई 2026। शक संवत 1948। आषाढ़। शुक्ल। तृतीया। :: पृष्ठ-20। मूल्य - 15 रुपए

## जन चिंतन

धनेश्वर चौधरी

### चढ़ावा चोरी : राजनीति नहीं जवाबदेही चाहिए

अयोध्या के श्रीराम मंदिर में चढ़ावे की कथित चोरी का मामला अब केवल एक आपराधिक घटना नहीं रह गया है। उत्तर प्रदेश सरकार ने इसकी जांच के लिए विशेष जांच दल (एसआईटी) गठित कर दी है, लेकिन इसके साथ ही राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप का दौर भी तेज हो गया है। सवाल यह है कि क्या इस संवेदनशील मामले का समाधान जांच से निकलेगा या फिर यह भी राजनीतिक शोर में दब जाएगा ?

राम मंदिर करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है। यहां चढ़ाया गया हर रुपया विश्वास का प्रतीक है। यदि उस विश्वास में सेंध लगती है, तो यह केवल धन की चोरी नहीं, बल्कि जनभावनाओं के साथ विश्वासघात है। इसलिए **शेष पृष्ठ 2 पर**

## अनशन या अड़ियल राजनीति ?



### सीजेपी का 'चलो संसद' अभियान 20 को

जन जन विचार  
... नई दिल्ली

किसी भी जनांदोलन की सबसे बड़ी ताकत उसकी नैतिक शक्ति, स्पष्ट उद्देश्य और जनता का विश्वास होता है। लेकिन जब आंदोलन का केंद्र मूल मुद्दे से हटकर राजनीतिक टकराव, शक्ति प्रदर्शन और प्रतीकात्मक संघर्ष बन जाए, तब यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या आंदोलन

अपने वास्तविक उद्देश्य से भटक गया है ? शिक्षाविद एवं सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक के नेतृत्व में चल रहा अनिश्चितकालीन अनशन अब ठीक इसी मोड़ पर खड़ा दिखाई देता है।

यह आंदोलन नीट परीक्षा में कथित अनियमितताओं, पेपर लीक और शिक्षा व्यवस्था में जवाबदेही की मांग के साथ शुरू हुआ था। देशभर के लाखों छात्रों **शेष पृष्ठ 3 पर**

### सरकार की 'वेट एंड वॉच' रणनीति

नई दिल्ली। जंतर-मंतर पर शिक्षाविद सोनम वांगचुक का अनिश्चितकालीन अनशन 19वें दिन में पहुंच चुका है। स्वास्थ्य लगातार गिर रहा है, विपक्षी दल खुलकर समर्थन में उतर आए हैं और 20 जुलाई को 'चलो संसद' मार्च का आह्वान किया गया है। इसके बावजूद केंद्र सरकार की ओर से न तो कोई बड़ा राजनीतिक बयान आया है और न ही आंदोलनकारियों से औपचारिक वार्ता की कोई पहल दिखाई दी है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर मोदी सरकार इस आंदोलन को अपेक्षित महत्व क्यों नहीं दे रही ?

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है **शेष पृष्ठ 3 पर**

## भाजपा संगठन में बड़े बदलाव के संकेत, मानसून सत्र से पहले कैबिनेट विस्तार

जन जन विचार  
... नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बीच हुई उच्चस्तरीय बैठक के बाद भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय संगठन और केंद्रीय मंत्रिमंडल में बड़े बदलाव की चर्चाएं तेज हो गई हैं। देर रात तक चली इस अहम बैठक में पार्टी के संगठनात्मक ढांचे, आगामी विधानसभा चुनावों की रणनीति और संभावित कैबिनेट फेरबदल पर विस्तार



से विचार-विमर्श किए जाने की जानकारी सामने आई है।

बैठक में भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) बीएल संतोष तथा पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन भी मौजूद रहे। राजनीतिक सूत्रों का कहना है कि केंद्रीय संगठन की नई टीम को अंतिम रूप दिए जाने की प्रक्रिया लगभग पूरी हो चुकी है और इसकी घोषणा जल्द हो सकती है। नई टीम में अनुभवी नेताओं के साथ युवा चेहरों, महिलाओं तथा विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों

को भी प्रमुख जिम्मेदारियां मिलने की संभावना जताई जा रही है।

सूत्रों के अनुसार, संगठनात्मक बदलावों के बाद केंद्रीय मंत्रिमंडल में भी फेरबदल की संभावना बढ़ गई है। कई मंत्रियों को राज्यों में संगठनात्मक जिम्मेदारियां दिए जाने के कारण कुछ पद रिक्त हो सकते हैं, जिन्हें नए चेहरों से भरा जा सकता है। माना जा रहा है कि यह कवायद 2027 के महत्वपूर्ण विधानसभा चुनावों और आगामी राजनीतिक चुनौतियों को ध्यान में रखकर की जा रही है।

## जब पंजाब के सिख योद्धा बने असम की मिट्टी के अपने लोग

जन जन विचार  
... गुवाहाटी

भारत की सांस्कृतिक विविधता की सबसे बड़ी खूबसूरती यही है कि यहां अलग-अलग समुदाय अपनी पहचान बनाए रखते हुए भी स्थानीय संस्कृति में घुल-मिल जाते हैं। इसका एक अनूठा उदाहरण है असम का असमिया सिख समुदाय, जो पिछले 204 वर्षों से असम की संस्कृति, समाज और

### 204 साल का गौरवशाली सफर

विकास का अभिन्न हिस्सा बना हुआ है।

इस ऐतिहासिक विरासत को यादगार बनाने के लिए अक्टूबर 2026 में नगांव जिले के चापरमुख सिंह गांव में तीन दिवसीय भव्य समारोह आयोजित किया जाएगा। यह वही स्थान है, जहां असमिया सिख समुदाय की नींव पड़ी थी।

इस आयोजन में मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है।

#### इतिहास के पन्नों से जुड़ी एक अनोखी कहानी

असम में सिख समुदाय का इतिहास केवल प्रवास की कहानी नहीं, बल्कि बलिदान, वीरता और भाईचारे का इतिहास है।

19वीं शताब्दी के आरंभ में जब असम पर बर्मी आक्रमण हुए, तब अहोम शासन गंभीर संकट में था। उस समय पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह ने अहोम राज्य की सहायता के लिए लगभग 500 सिख सैनिकों को असम भेजा।

इन सैनिकों ने बर्मी सेना के खिलाफ वीरतापूर्वक युद्ध लड़ा।

कई सैनिक हादीराचोकी के युद्ध में शहीद हो गए, जबकि जीवित बचे कुछ सैनिक चापरमुख क्षेत्र में तिताइमारी नदी के किनारे बस गए। यहीं से असम में सिख समुदाय की नई पहचान की शुरुआत हुई।

#### असम की धरती बनी स्थायी घर

समय के साथ इन सैनिकों ने चापरमुख में अपने घर बनाए, गुरुद्वारा स्थापित किया और स्थानीय **शेष पृष्ठ 7 पर**



# एसटी दर्जे की मांग पर उबाल, आंदोलन की धमकी

कोच-राजवंशी संगठनों का प्रदर्शन, केंद्रीय मंत्री जुएल ओराम और मंत्री रनोज पेगू के पुतले फूंकें

## जन जन विचार

... गुवाहाटी/तामुलपुर

अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा देने की लंबे समय से लंबित मांग को लेकर असम में एक बार फिर राजनीतिक और सामाजिक माहौल गर्म हो गया है। गुरुवार को तामुलपुर जिले में ऑल कोच राजवंशी स्टूडेंट्स यूनियन (आक्रासू) और अन्य संगठनों के नेतृत्व में सैकड़ों लोगों ने जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने भारत-भूटान राष्ट्रीय मार्ग पर केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्री जुएल ओराम



और असम के जनजातीय कार्य मंत्री रनोज पेगू के पुतले जलाकर सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि केंद्र और राज्य की भाजपा सरकार

ने चुनाव के दौरान कोच-राजवंशी समुदाय को एसटी का दर्जा दिलाने का वादा किया था, लेकिन वर्षों बाद भी यह वादा केवल आश्वासनों तक सीमित है। प्रदर्शन में शामिल लोगों

ने 'हमें एसटी चाहिए' जैसे नारों के साथ सरकार पर समुदाय को बार-बार गुमराह करने का आरोप लगाया।

आंदोलनकारियों ने भाजपा के कोच-राजवंशी विधायकों की भूमिका पर भी सवाल उठाए। उनका कहना था कि सरकार में प्रतिनिधित्व होने के बावजूद समुदाय की आवाज प्रभावी ढंग से नहीं उठाई जा रही है। संगठनों ने स्पष्ट चेतावनी दी कि यदि सरकार ने जल्द कोई ठोस निर्णय नहीं लिया, तो आंदोलन पूरे राज्य में और व्यापक रूप से चलाया

जाएगा।

यह विरोध ऐसे समय सामने आया है जब हाल ही में केंद्रीय मंत्री जुएल ओराम ने कहा था कि संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत किसी भी समुदाय को एसटी सूची में शामिल करने की प्रक्रिया जटिल और बहु-स्तरीय है, इसलिए इसमें समय लगेगा। वहीं, असम विधानसभा में मंत्री रनोज पेगू ने जानकारी दी कि राज्य सरकार अपनी रिपोर्ट तैयार कर चुकी है और मुख्यमंत्री की मंजूरी के बाद संशोधित प्रस्ताव शीघ्र ही केंद्र सरकार को भेजा जाएगा।

## भारत विकास परिषद मध्य गुवाहाटी शाखा ने मनाया 63वां स्थापना दिवस



## जन जन विचार

... गुवाहाटी

भारत विकास परिषद की मध्य गुवाहाटी शाखा द्वारा हाल ही में बिष्णुपुर स्थित निजी सेवा केंद्र में परिषद का 63वां स्थापना दिवस श्रद्धा, उत्साह और राष्ट्रभक्ति के वातावरण में मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता के चित्र पर दीप प्रज्वलन एवं पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। इसके पश्चात सभी उपस्थितजनों ने सामूहिक रूप से 'वंदे मातरम' का गायन किया।

इस अवसर पर डॉ. राधेश्याम तिवारी, नटवर अग्रवाल एवं प्रांत सेवा प्रमुख संतलाल मित्तल ने

परिषद के सेवा कार्यों और राष्ट्र निर्माण में उसकी भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। संतलाल मित्तल ने कहा कि भारत विकास परिषद सदैव सेवा, सहयोग और संस्कार के कार्यों के लिए समर्पित रही है। उन्होंने बताया कि देश पर किसी भी प्रकार के संकट की घड़ी में परिषद के कार्यकर्ता अग्रिम पंक्ति में रहकर सेवा कार्य करते हैं। वर्तमान में परिषद की देशभर में लगभग 1,700 शाखाएं तथा 75,000 से अधिक सदस्य सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

कार्यक्रम में प्रांत सेवा प्रमुख संतलाल मित्तल, विमल अग्रवाल, शाखा सचिव अभय घोषाल, सहसचिव सौरभ बोथरा जैन,

कोषाध्यक्ष विजय सिंह सुराणा, मीडिया प्रभारी तनसुख राठी, नटवर अग्रवाल, भंवरलाल अग्रवाल, केएन सिंह, सुरेश गर्ग, मधुसूदन चरखा, सुशांत सरकार, राजीव राय, अधिवक्ता विश्वंभर शर्मा, किशन कुमार शाह सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सेवा केंद्र के सिलाई प्रशिक्षण केंद्र के छात्र-छात्राओं ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन सौरभ जैन ने किया। राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ। इसके पश्चात सभी के लिए जलपान की व्यवस्था की गई। अंत में शाखा सचिव अभय घोषाल ने उपस्थित सभी अतिथियों, कार्यकर्ताओं एवं छात्र-छात्राओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

## पृष्ठ 1 का शेषांश...

### चढ़ावा चोरी : राजनीति...

एसआईटी की जांच केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि पूरी पारदर्शिता और समयबद्ध तरीके से होनी चाहिए। दोषी चाहे कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो, उसे कानून के कठघरे तक पहुंचाना ही

जांच की असली कसौटी होगी। दूसरी ओर, विपक्ष सरकार पर सवाल उठा रहा है, जबकि सत्ता पक्ष इसे अलग दिशा देने की कोशिश कर रहा है। लेकिन यह समय राजनीतिक लाभ-हानि का नहीं, बल्कि जवाबदेही का है। मंदिर किसी दल का नहीं, पूरे राष्ट्र की आस्था का विषय है। इसलिए इस मामले को चुनावी हथियार

बनाना भी उतना ही अनुचित है, जितना चोरी की घटना स्वयं।

देश चाहता है कि एसआईटी सच्चाई सामने लाए, दोषियों को कठोर सजा मिले और मंदिर प्रबंधन की व्यवस्था इतनी मजबूत बने कि भविष्य में ऐसी घटना दोबारा न हो। रामलला के दरबार में राजनीति नहीं, मर्यादा, पारदर्शिता और न्याय की जीत होनी चाहिए।

## राशिफल

17 से 23 जुलाई 2026 ।। विक्रम संवत् 2083-मास : आषाढ़, पक्ष : शुक्ल, तिथि : तृतीया

- मेघ:** इस सप्ताह करियर में प्रगति के अच्छे अवसर मिलेंगे। रुके हुए कार्य पूरे हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी। परिवार का सहयोग मिलेगा और स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।
- वृषभ:** मेहनत का सकारात्मक परिणाम मिलेगा। धन लाभ के योग बन रहे हैं। परिवार में खुशियों का माहौल रहेगा। खर्चों पर नियंत्रण रखें।
- मिथुन:** नौकरी और व्यापार में नए अवसर मिल सकते हैं। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा। प्रेम संबंधों में मधुरता बनी रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।
- कर्क:** आत्मविश्वास बढ़ेगा और कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार के साथ अच्छा समय बिताने का अवसर मिलेगा।
- सिंह:** मान-सम्मान में वृद्धि होगी। नौकरी और व्यवसाय में लाभ के संकेत हैं। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा और स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।
- कन्या:** नई योजनाएं सफल हो सकती हैं। आर्थिक मामलों में लाभ मिलेगा। विद्यार्थियों को मेहनत का अच्छा फल मिलेगा। तनाव से बचें।
- तुला:** करियर में प्रगति और नए अवसर मिलेंगे। धन संबंधी मामलों में सुधार होगा। परिवार और प्रेम जीवन सुखद रहेगा।
- वृश्चिक:** मेहनत का पूरा लाभ मिलेगा। व्यापार में अच्छी प्रगति होगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।
- धनु:** नई शुरुआत के लिए समय अनुकूल है। नौकरी और व्यवसाय में सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी। यात्रा के योग बन सकते हैं।
- मकर:** कार्यक्षेत्र में आपकी मेहनत रंग लाएगी। धन लाभ के अवसर मिलेंगे। परिवार का सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।
- कुंभ:** आय के नए स्रोत बन सकते हैं। नौकरी और व्यापार में सफलता मिलेगी। रिश्तों में मधुरता बढ़ेगी और आत्मविश्वास मजबूत रहेगा।
- मीन:** सप्ताह शुभ और लाभदायक रहेगा। रुके हुए कार्य पूरे होंगे। आर्थिक स्थिति बेहतर होगी। परिवार में खुशियाँ रहेंगी और स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

## सप्ताह के पर्व/त्योहार

17 जुलाई (शुक्रवार) : वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी

18 जुलाई (शनिवार) : मनसा पूजा

19 जुलाई (रविवार) : श्री स्कन्द षष्ठी व्रत

22 जुलाई (बुधवार) : खर्ची पूजा



● ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल

भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड  
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387



# मेघालय में पर्यटकों के लिए पंजीकरण अनिवार्य

जन जन विचार  
... शिलांग

पूर्वोत्तर का खूबसूरत राज्य मेघालय अपनी प्राकृतिक सुंदरता, झरनों, पहाड़ियों और जीवंत संस्कृति के कारण देश-विदेश के लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है। लेकिन बढ़ती पर्यटक संख्या के साथ सुरक्षा, अवैध प्रवेश और आगंतुकों की निगरानी जैसी चुनौतियां भी सामने आ रही हैं।

इन्हीं चुनौतियों से निपटने के लिए मेघालय सरकार अब इनर लाइन परमिट (आईएलपी) की तर्ज पर सभी पर्यटकों और अन्य आगंतुकों के लिए अनिवार्य पंजीकरण प्रणाली लागू करने की तैयारी कर रही है।

यदि यह व्यवस्था लागू होती है, तो राज्य में प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पहचान, यात्रा का उद्देश्य और आवश्यक दस्तावेजों का सत्यापन कराना होगा।

## क्या है प्रस्तावित व्यवस्था ?

सरकार की योजना के अनुसार मेघालय में प्रवेश करने वाले सभी पर्यटकों और अन्य आगंतुकों को राज्य में प्रवेश से पहले या प्रवेश के समय पंजीकरण कराना होगा।

इस प्रक्रिया में पहचान संबंधी दस्तावेजों का सत्यापन, यात्रा के उद्देश्य की जानकारी, आगंतुक का रिकॉर्ड तैयार करना, आवश्यकता पड़ने पर पृष्ठभूमि की जांच और राज्य में आने-जाने का डिजिटल रिकॉर्ड तैयार किया जाएगा।

इससे सरकार के पास आगंतुकों का एक व्यवस्थित और अद्यतन डाटाबेस उपलब्ध रहेगा।



## आईएलपी जैसी व्यवस्था लेकिन अलग मॉडल

मेघालय में अभी इनर लाइन परमिट (आईएलपी) लागू नहीं है, हालांकि लंबे समय से इसकी मांग उठती रही है।

प्रस्तावित पंजीकरण प्रणाली आईएलपी की तरह प्रवेश पर निगरानी तो करेगी, लेकिन यह पूर्ण आईएलपी व्यवस्था नहीं होगी।

पूर्वोत्तर के अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मिजोरम और मणिपुर में लागू आईएलपी के तहत बाहरी लोगों को राज्य में प्रवेश के लिए पूर्व अनुमति लेनी होती है। मेघालय का नया मॉडल मुख्य रूप से आगंतुकों के पंजीकरण और सत्यापन पर आधारित होगा।

## सरकार ने क्यों उठाया यह कदम ?

पर्यटन मंत्री टिमोथी डी. शिरा के अनुसार राज्य में हर वर्ष बड़ी संख्या में लोग पर्यटन के नाम पर

प्रवेश करते हैं।

सरकार यह सुनिश्चित करना चाहती है कि राज्य में आने वाले सभी लोग वैध दस्तावेजों के साथ आएँ। भारतीय नागरिकों और विदेशी पर्यटकों की सही पहचान हो। अवैध प्रवेश पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सके। सुरक्षा एजेंसियों को आवश्यक जानकारी समय पर उपलब्ध हो।

यह व्यवस्था पर्यटन और सुरक्षा-दोनों के बीच संतुलन बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास मानी जा रही है।

## प्रवेश केंद्रों पर होगी सुविधा

सरकार उमलिंग और बेरुबारी सहित विभिन्न प्रवेश बिंदुओं पर पंजीकरण केंद्र स्थापित करने की योजना बना रही है।

विशेष रूप से उमलिंग में प्रस्तावित फूड कोर्ट केवल खान-पान की सुविधा ही नहीं देगा, बल्कि

उसे एक टूरिस्ट फैसिलिटेशन एवं रजिस्ट्रेशन सेंटर के रूप में भी विकसित किया जाएगा।

जब तक पंजीकरण प्रक्रिया पूरी होगी, तब तक पर्यटक वहां उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग कर सकेंगे।

भविष्य में राज्य के अन्य प्रमुख प्रवेश मार्गों पर भी ऐसे केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

## पर्यटन पर क्या पड़ेगा असर ?

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि पंजीकरण प्रक्रिया सरल, तेज और डिजिटल होगी, तो इसका पर्यटन पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

इसके संभावित लाभ हो सकते हैं- पर्यटकों की सुरक्षा में वृद्धि, आपातकालीन स्थिति में त्वरित सहायता, अपराध और अवैध गतिविधियों पर बेहतर निगरानी, पर्यटन प्रबंधन में पारदर्शिता, सरकार के पास वास्तविक समय का डेटा

उपलब्ध होना।

हालांकि, यदि प्रक्रिया अत्यधिक जटिल या समय लेने वाली हुई, तो पर्यटकों को असुविधा भी हो सकती है। इसलिए इसके प्रभावी और तकनीक-आधारित क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान देना होगा।

## सीमावर्ती राज्यों के लिए भी महत्वपूर्ण पहल

मेघालय की सीमाएं असम और बांग्लादेश से जुड़ी हैं। ऐसे में सीमा प्रबंधन, अवैध आवाजाही और सुरक्षा संबंधी चुनौतियां लंबे समय से चर्चा का विषय रही हैं।

नई पंजीकरण प्रणाली से राज्य प्रशासन को आगंतुकों की बेहतर निगरानी करने में मदद मिलेगी और सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा व्यवस्था को भी मजबूती मिल सकती है।

मेघालय सरकार की प्रस्तावित अनिवार्य पर्यटक पंजीकरण व्यवस्था केवल प्रशासनिक बदलाव नहीं, बल्कि सुरक्षा, पर्यटन प्रबंधन और पारदर्शिता को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

यदि इसे आधुनिक डिजिटल तकनीक, आसान प्रक्रिया और पर्यटक-अनुकूल सुविधाओं के साथ लागू किया जाता है, तो यह मॉडल भविष्य में अन्य पर्यटन राज्यों के लिए भी एक उदाहरण बन सकता है। इसका उद्देश्य पर्यटन को रोकना नहीं, बल्कि उसे अधिक सुरक्षित, सुव्यवस्थित और जिम्मेदार बनाना है-ताकि मेघालय की प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर का आनंद लेने आने वाले हर आगंतुक का अनुभव सुरक्षित और बेहतर हो।

## पृष्ठ 1 का शेषांश...

### अनशन या अड़ियल राजनीति ?

और अभिभावकों की चिंता से जुड़े इस मुद्दे को व्यापक जनसमर्थन भी मिला। लोगों को उम्मीद थी कि इस आंदोलन के माध्यम से परीक्षा प्रणाली में सुधार, दोषियों पर कार्रवाई और भविष्य में ऐसी घटनाओं पर रोक लगाने की दिशा में ठोस पहल होगी।

लेकिन 19 दिन बाद तस्वीर बदलती नजर आ रही है। अब चर्चा शिक्षा सुधार से अधिक सोनम वांगचुक के गिरते स्वास्थ्य, राजनीतिक दलों की आवाजाही, फिल्मी हस्तियों के समर्थन और सीजेपी (काँकरोच जनता पार्टी) द्वारा घोषित 20 जुलाई के 'चलो संसद' अभियान पर केंद्रित हो गई है। सवाल उठ रहा है कि क्या आंदोलन का उद्देश्य अब समाधान निकालना है या सरकार के साथ सीधा राजनीतिक टकराव पैदा करना ?

सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि आंदोलन का सबसे मजबूत हथियार (उसकी नैतिकता) अब स्वास्थ्य संकट की भेंट चढ़ता दिखाई दे रहा है। डॉक्टर लगातार चेतावनी दे रहे हैं कि लंबा अनशन जानलेवा साबित हो सकता है। इसके बावजूद आंदोलन को और तेज करने की घोषणा की

जा रही है। लोकतंत्र में विरोध का अधिकार निर्विवाद है, लेकिन क्या किसी आंदोलन की सफलता उसके नेतृत्व के स्वास्थ्य को दांव पर लगाकर हासिल की जानी चाहिए ? यह प्रश्न समाज के सामने गंभीरता से खड़ा है।

आंदोलन को कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, आम आदमी पार्टी और अन्य विपक्षी दलों का खुला समर्थन मिल रहा है। अनेक कलाकार और सामाजिक कार्यकर्ता भी इसके पक्ष में खड़े हैं। लेकिन जैसे-जैसे राजनीतिक समर्थन बढ़ रहा है, वैसे-वैसे यह धारणा भी मजबूत हो रही है कि शिक्षा जैसे गंभीर विषय को राजनीतिक संघर्ष का हथियार बनाया जा रहा है। यदि जनता का ध्यान परीक्षा सुधार से हटकर राजनीतिक बयानबाजी पर केंद्रित हो जाए, तो सबसे बड़ा नुकसान उसी मूल मुद्दे का होता है, जिसके लिए आंदोलन शुरू किया गया था।

यह भी सच है कि नीट पेपर लीक और परीक्षा प्रणाली में खामियों ने देश के करोड़ों युवाओं का भरोसा तोड़ा है। इस पर सरकार की जवाबदेही तय होना आवश्यक है। दोषियों को कड़ी सजा मिलनी चाहिए और ऐसी व्यवस्था विकसित होनी चाहिए, जिससे भविष्य में छात्रों का भविष्य किसी लापरवाही का शिकार न बने। लेकिन उतना ही आवश्यक यह भी है कि आंदोलन अपनी विश्वसनीयता और नैतिक

ऊंचाई बनाए रखे।

इतिहास गवाह है कि सफल जनांदोलन वही रहे हैं जिन्होंने संघर्ष के साथ संवाद का रास्ता भी खुला रखा। सड़क का दबाव सरकार को सोचने पर मजबूर कर सकता है, लेकिन स्थायी समाधान संसद, न्यायपालिका और संस्थागत सुधारों से ही निकलता है। यदि आंदोलन केवल टकराव की दिशा में आगे बढ़ता है, तो उसका मूल उद्देश्य पीछे छूट जाता है।

20 जुलाई को प्रस्तावित 'चलो संसद' मार्च केवल एक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि इस आंदोलन की दिशा तय करने वाली परीक्षा भी होगा। यदि इससे शिक्षा सुधार पर राष्ट्रीय सहमति बनती है, तो आंदोलन अपनी सफलता की ओर बढ़ेगा। लेकिन यदि यह केवल शक्ति प्रदर्शन और राजनीतिक धुवीकरण तक सीमित रह गया, तो यह कहना गलत नहीं होगा कि एक महत्वपूर्ण जनांदोलन अपने मूल लक्ष्य से भटक गया।

आज जरूरत सरकार और आंदोलन-दोनों से परिपक्वता की है। सरकार को संवाद और जवाबदेही का रास्ता अपनाना चाहिए, वहीं आंदोलनकारियों को भी यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी भी आंदोलन की सबसे बड़ी जीत विरोध नहीं, बल्कि परिवर्तन होती है।



## संपादकीय

## शेख हसीना की वापसी

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की स्वदेश वापसी की घोषणा ने दक्षिण एशिया की राजनीति में नई हलचल पैदा कर दी है। यह केवल एक नेता की वापसी नहीं, बल्कि बांग्लादेश की बदलती राजनीतिक परिस्थितियों का संकेत भी है। बड़ा सवाल यह है कि क्या यह आत्मसमर्पण है या फिर सुनियोजित राजनीतिक रणनीति?

सत्ता से बाहर होने के बावजूद शेख हसीना और उनकी पार्टी अवामी लीग का जनाधार पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। ऐसे में उनकी वापसी का उद्देश्य तत्काल सत्ता हासिल करना नहीं, बल्कि संगठन को मजबूत करना, समर्थकों का मनोबल बढ़ाना और राजनीतिक संघर्ष को नई दिशा देना माना जा रहा है।

हालांकि, उनकी राह आसान नहीं होगी। देश पहले से राजनीतिक तनाव, आर्थिक चुनौतियों और अंतर्राष्ट्रीय दबाव का सामना कर रहा है। यदि उनकी सक्रियता राजनीतिक टकराव बढ़ाती है, तो अस्थिरता गहरा सकती है। वहीं, यदि वह लोकतांत्रिक संवाद और जनसमर्थन के रास्ते आगे बढ़ती हैं, तो यह बांग्लादेश की राजनीति को नई दिशा दे सकता है।

भारत के लिए भी यह घटनाक्रम महत्वपूर्ण है, क्योंकि दोनों देशों के संबंधों में शेख हसीना की भूमिका हमेशा अहम रही है। उनकी वापसी का असर द्विपक्षीय रिश्तों पर भी पड़ सकता है।

स्पष्ट है कि शेख हसीना की वापसी केवल व्यक्तिगत फैसला नहीं, बल्कि बांग्लादेश की राजनीति के नए दौर की शुरुआत हो सकती है। अब इसकी दिशा और परिणाम समय तथा जनता के फैसले पर निर्भर करेंगे।

## विवादों से सबक लेने की जरूरत

लोकतांत्रिक राजनीति में चुनाव केवल जीत का माध्यम नहीं, बल्कि दलों की संगठनात्मक क्षमता और निर्णय प्रक्रिया की भी परीक्षा होते हैं। हाल के दिनों में बांकीपुर उपचुनाव में उम्मीदवार बदलने और दतिया में टिकट वितरण को लेकर उत्पन्न विवादों ने भारतीय जनता पार्टी को भी आत्ममंथन का अवसर दिया है।

बांकीपुर प्रकरण ने यह सवाल खड़ा किया है कि यदि किसी उम्मीदवार को लेकर विवाद की आशंका थी, तो टिकट देने से पहले पर्याप्त जांच क्यों नहीं हुई? समय रहते उम्मीदवार बदलना निश्चित रूप से नुकसान कम करने का प्रयास माना जा सकता है, लेकिन ऐसी स्थिति का उत्पन्न होना संगठनात्मक सतर्कता पर प्रश्नचिह्न भी लगाता है।

दूसरी ओर, दतिया में टिकट वितरण के बाद सामने आए असंतोष ने यह स्पष्ट किया कि किसी भी राजनीतिक दल में अनुशासन सर्वोपरि होना चाहिए। लोकतंत्र में असहमति स्वाभाविक है, लेकिन उसे संगठन की मर्यादा के भीतर व्यक्त करना ही स्वस्थ राजनीतिक संस्कृति की पहचान है।

राम मंदिर से जुड़े हालिया विवादों ने भी यह संदेश दिया है कि आस्था से जुड़े विषयों में पारदर्शिता, जवाबदेही और प्रभावी प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हैं। जनता केवल भावनात्मक मुद्दों से नहीं, बल्कि सुशासन और जिम्मेदार व्यवस्था से भी विश्वास कायम करती है।

राजनीति में विवाद कभी-कभी अपरिहार्य होते हैं, लेकिन किसी भी दल की परिपक्वता इस बात से तय होती है कि वह उनसे कितना शीघ्र सबक लेकर सुधार करता है। जनता की अपेक्षा भी यही है कि राजनीतिक दल विवादों को चुनावी रणनीति नहीं, बल्कि आत्मसुधार का अवसर मानें।

## नेपाल में हिंदी की मांग

## जन जन विचार

...✍ उमेश चतुर्वेदी

नेपाल की जनकपुर उपमहानगर पालिका ने अपने अधीन प्राथमिक विद्यालय में मैथिली भाषा की पढ़ाई का फैसला लिया है। जनकपुर से महज तीस किलोमीटर दूर भारतीय सीमा में पहले से ही मैथिली की पढ़ाई हो रही है। भारत में मैथिली भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषा है। चूंकि जनकपुर के आसपास मैथिलीभाषियों की अच्छी-खासी संख्या है। लिहाजा जनकपुर उपमहानगर पालिका के इस निर्णय का मैथिलभाषी समुदाय में स्वागत होना लाजमी है। लेकिन नेपाल का ही एक वर्ग इस फैसले के विरोध में उतर आया है। दिलचस्प यह है कि उसे मैथिली से कोई बुनियादी विरोध नहीं है, बल्कि वह चाहता है कि मधेस इलाकों में हिंदी की विधिवत पढ़ाई होनी चाहिए।

हिंदी समर्थक इस वर्ग का तर्क है कि इस कदम से नेपाल में बोली जाने वाली भारतीय मूल की भाषाओं के बीच एकता का संदेश जाएगा और यह एकता मधेस समुदाय की राजनीतिक ताकत को बढ़ावा देगी। लेकिन मधेस समाज के लोग अपनी-अपनी भाषाओं की अगर पढ़ाई पर जोर देने लगेंगे तो इससे मधेस समाज में बिखराव आएगा और उनकी एकता में दरार बड़ेगी। इसका सीधा फायदा संख्या के लिहाज से मधेस समुदाय की तुलना में छोटा खस आर्य मूल के नेपाली समुदाय का नेपाल की राजनीति में वर्चस्व बना रह सकता है।

नेपाल में भाषा को लेकर उठे इन सवाल पर विचार से पहले मधेस समुदाय के बारे में मोटे तौर पर कुछ बातें समझना आवश्यक है। नेपाल में पहाड़ी मूल के अलावा तराई में जो लोग रहते हैं, उन्हें मधेस या मधेसी कहा जाता है। मधेस समुदाय की व्यापकता उत्तर प्रदेश की सीमा से लेकर बिहार होते हुए पश्चिम बंगाल की सीमा तक नेपाली हिस्से में है। नेपाल की कुल जनसंख्या तीन करोड़ है। आंकड़ों के मुताबिक, करीब 53 प्रतिशत यानी लगभग एक करोड़ साठ लाख लोग मधेसी हैं। नेपाल में बड़ी जनसंख्या होने के बावजूद यहां की शासन व्यवस्था में पहाड़ी मूल के लोगों का ही वर्चस्व रहा है, जिनकी जनसंख्या करीब एक करोड़ चालीस लाख है।

मधेसी समुदाय का अपने सीमावर्ती भारतीय इलाकों के लोगों से रोटी और बेटी का रिश्ता है। वे लोग पहाड़ी मूल के लोगों की बजाय सीमावर्ती भारतीय इलाकों के लोगों की तरह दिखते, रहते, खाते-पीते और बोलते हैं। इनमें अवधी, भोजपुरी, थारू, बज्जिका, अंगिका, मैथिली, सतार, मगही, राजवंशी और मैथिलीभाषी शामिल हैं। नेपाल की राष्ट्रीय मुक्ति पार्टी के नेता रह चुके रमन पांडेय इन दिनों हिंदी के लिए स्वतंत्र रूप से अभियान चला रहे हैं। उनका तर्क है कि मैथिली की पढ़ाई से उन्हें एतराज नहीं है। लेकिन इससे मधेस समुदाय की आपसी एकता में दरार पड़ेगी। उनका कहना है कि नेपाल का पहाड़ी शासक समुदाय चाहता है कि मधेस समाज की एकता बाधित हो। यह उसके हित में है, क्योंकि मधेस जनसंख्या अगर बंटी होगी तो पहाड़ी मूल के लोग चुनावों में जीतते रहेंगे और कम संख्या के बावजूद वे देश पर शासन करते रहेंगे।

नेपाल में 133 भाषाएं बोली जाती हैं। लेकिन यहां मोटे तौर पर नेपाली और अंग्रेजी माध्यम से ही पढ़ाई होती है।

नेपाल में हिंदी की पढ़ाई की मांग करने वाले वर्ग का तर्क है कि अगर हिंदी को शासकीय मान्यता मिलती है और उसकी पढ़ाई होती है तो वह नेपाल की सभी 133 भाषाओं के आपसी संपर्क का सबसे बड़ा जरिया होगी। यह मांग कुछ वैसे ही है, जैसे भारत में आपसी संपर्क भाषा के लिए हिंदी को अपनाने का विचार केशवचंद्र सेन, गुजराती कवि नर्मदा शंकर उपाध्याय, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी और बिनोबा भावे सदृश हस्तियों ने दिया था। बिनोबा और पुरुषोत्तम दास टंडन ने तो देवनागरी लिपि को दूसरी भाषाओं द्वारा अपनाए जाने और उसके विस्तार की जोरदार पैरवी की थी। रमन पांडेय जैसे लोग भी नेपाल में हिंदी को कुछ उसी तरह आगे लाने की मांग कर रहे हैं। उनका तर्क है कि अगर हिंदी को मान्यता मिली तो नेपाल की स्थानीय भाषाओं के बीच मजबूत कड़ी बनकर उभरेगी। वैसे भी मधेस समुदाय जब दूसरे भाषा-भाषी से बात करता है तो वह हिंदी का ही सहारा

लेता है। इससे नेपाली एकता की भावना को तो मजबूती मिलेगी ही, भारतीय सीमा पार रिश्तों को निभाने में नेपाली लोगों मदद मिलेगी। हिंदी समर्थकों का यह भी तर्क है कि मधेस समुदाय की आपसी एकता को भी हिंदी के ही जरिए मजबूती मिल सकेगी। मधेस आबादी नेपाल के बाईस जिलों में फैली हुई है। रमन पांडेय जैसे लोगों का तर्क है कि बाईस जिलों के लोगों को एक माला में जोड़ने में हिंदी ही कामयाब हो सकती है। रमन पांडेय का कहना है कि नेपाली भाषा बेहद छोटे समुदाय खस आर्य की भाषा है। जिनकी संख्या एक

करोड़ भी नहीं है। लेकिन वह पूरे देश की एक मात्र भाषा बनी हुई है।

इसमें दो राय नहीं कि नेपाल के तराई यानी मधेस और भारत से सटे इलाकों में हिंदी का प्रभाव गहरा और व्यापक है। नेपाल और भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत साझा है। नेपाल में भी हिंदी का व्यापक स्तर पर प्रयोग होता है। इतना ही नहीं, मधेस समुदाय के आपसी संपर्क का भी जरिया हिंदी ही है। हिंदी पहाड़ी यानी खस समुदाय के लिए भी मधेस समुदाय से जुड़ने का जरिया है। अगर हिंदी को मान्यता मिलती है तो संपर्क भाषा हिंदी को नई ताकत मिलेगी। हिंदी नेपाली समुदायों को तो आपस में जोड़ेगी ही, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक साझा विरासत की बुनियाद पर नेपाल और भारत के रिश्तों को भी नई गति मिलेगी।

ऐसा नहीं कि नेपाल में हिंदी के विरोधी नहीं हैं। लिपुलेख और कालापानी विवाद के वक्त तो तत्कालीन नेपाली प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने नेपाल में हिंदी पर पाबंदी लगाने तक की बात कर डाली थी। यह बात और है कि इसका विरोध उनकी पार्टी में ही हुआ था। हिंदी के मशहूर पत्रकार बनारसीदास चतुर्वेदी ने हिंदी में जनपदीय आंदोलन चलाया था। नेपाल के हिंदी समर्थकों को इसे भी ध्यान में रखना होगा। बनारसीदास चतुर्वेदी जनपदीय भाषाओं को बढ़ावा देने के जरिए भाषायी लोकतंत्र की वकालत कर रहे थे। उन्हें पता था कि जनपदीय भाषाओं के आपसी संपर्क और संवाद के लिए हिंदी ही सहयोगी होगी। इसलिए वे जनपदीय भाषाओं के विस्तार के जरिए हिंदी को बढ़ावा दे रहे थे। नेपाल के हिंदी समर्थकों को भी आपसी भाषाओं के बीच कुछ उसी तरह सौहार्द्र को बढ़ावा देते हुए हिंदी के विकास की बात करनी होगी। इसी बहाने नेपाल में वे हिंदी को प्रतिष्ठापित करने में सफल हो सकेंगे।



मोदी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड दौरा

## ऊर्जा, व्यापार व समुद्री रणनीति पर बड़ा दांव

जन जन विचार  
... नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हालिया इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड का तीन देशों का दौरा केवल कूटनीतिक औपचारिकता नहीं था। इस यात्रा ने भारत की ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री रणनीति, व्यापार, रक्षा सहयोग और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में उसकी बढ़ती भूमिका को नई मजबूती देने की दिशा में कई महत्वपूर्ण समझौतों का मार्ग प्रशस्त किया।

सबसे अधिक चर्चा ऑस्ट्रेलिया से यूरेनियम आपूर्ति समझौते, इंडोनेशिया के साथ बंदरगाह एवं समुद्री सहयोग और इंडो-पैसिफिक साझेदारी को लेकर हो रही है। इन समझौतों का असर केवल भारत तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि चीन और अमेरिका की रणनीतिक गणनाओं पर भी इसका प्रभाव पड़ सकता है।

**ऑस्ट्रेलिया से यूरेनियम : ऊर्जा सुरक्षा को नई ताकत**

दौरे की सबसे बड़ी उपलब्धियों में ऑस्ट्रेलिया के साथ नागरिक परमाणु ऊर्जा के लिए यूरेनियम आपूर्ति समझौते को आगे बढ़ाना रहा।

इस समझौते से भारत के परमाणु



ऊर्जा कार्यक्रम को दीर्घकालिक ईंधन मिलेगा। 2047 तक परमाणु ऊर्जा क्षमता बढ़ाने की भारत की योजना को गति मिलेगी। स्वच्छ ऊर्जा और कार्बन उत्सर्जन कम करने के लक्ष्य को समर्थन मिलेगा। भारत की ऊर्जा आपूर्ति अधिक विविध और सुरक्षित होगी।

इसके साथ ही दोनों देशों ने क्रिटिकल मिनरल्स, ग्रीन हाइड्रोजन, स्वच्छ ऊर्जा, रक्षा, समुद्री सुरक्षा

और आपूर्ति श्रृंखला में सहयोग बढ़ाने पर भी सहमति जताई।

**इंडोनेशिया : बंदरगाह और समुद्री सहयोग का विस्तार**

इंडोनेशिया के साथ हुई बातचीत का केंद्र समुद्री संपर्क, व्यापार और बंदरगाह अवसंरचना रहा।

भारत और इंडोनेशिया पहले से ही हिंद महासागर और मलक्का जलडमरूमध्य क्षेत्र में महत्वपूर्ण साझेदार हैं। बंदरगाह सहयोग और समुद्री संपर्क बढ़ने से - भारत की पूर्वी समुद्री रणनीति को मजबूती मिलेगी। व्यापारिक जहाजों की आवाजाही सुगम होगी। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत की रणनीतिक उपस्थिति और मजबूत होगी। पूर्वोत्तर भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच आर्थिक संपर्क बढ़ सकता है।

**न्यूजीलैंड के साथ आर्थिक और रणनीतिक रिश्ते**

दौरे के तीसरे चरण में न्यूजीलैंड के साथ व्यापार, शिक्षा, कृषि, तकनीक और निवेश जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर चर्चा हुई। हालांकि यह दौरा ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया जितना रणनीतिक नहीं माना गया, फिर भी इससे भारत की इंडो-पैसिफिक नीति को व्यापक आधार मिलने की संभावना है।

**चीन को क्यों हो सकती है चिंता ?**

विशेषज्ञों का मानना है कि इस दौरे का सबसे बड़ा भू-राजनीतिक संदेश इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत की बढ़ती सक्रियता है।

**संभावित कारण:**

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच रक्षा तथा समुद्री सहयोग का विस्तार। ऊर्जा और महत्वपूर्ण खनिजों की वैकल्पिक आपूर्ति। हिंद महासागर और दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत की बढ़ती मौजूदगी। चीन पर निर्भर वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के विकल्प तैयार करने की दिशा में प्रयास। हालांकि भारत ने इस दौरे को किसी देश के खिलाफ नहीं, बल्कि सहयोग और विकास केंद्रित बताया है।

**अमेरिका की नजर से क्यों महत्वपूर्ण ?**

अमेरिका लंबे समय से भारत को इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण साझेदार मानता है।

भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंधों की मजबूती, समुद्री सुरक्षा सहयोग और ऊर्जा साझेदारी अमेरिका की व्यापक इंडो-पैसिफिक रणनीति के अनुरूप मानी जा रही है। इसलिए इस यात्रा को अमेरिका के लिए सकारात्मक माना जा सकता है, क्योंकि इससे क्षेत्रीय सहयोग और आपूर्ति श्रृंखला की विविधता को बढ़ावा मिलता है।

**भारत को क्या होंगे सीधे लाभ ?**

इस यात्रा से भारत को कई क्षेत्रों में लाभ मिलने की संभावना है-

परमाणु ऊर्जा के लिए दीर्घकालिक यूरेनियम आपूर्ति। ऊर्जा सुरक्षा में मजबूती। व्यापार और निवेश के नए अवसर। समुद्री संपर्क और बंदरगाह सहयोग का विस्तार। रक्षा एवं इंडो-पैसिफिक साझेदारी में मजबूती। स्वच्छ ऊर्जा और महत्वपूर्ण खनिजों तक बेहतर पहुंच। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में भारत की भूमिका का विस्तार।

मोदी का तीन देशों का यह दौरा केवल समझौतों पर हस्ताक्षर तक सीमित नहीं है। यह भारत की उस विदेश नीति का संकेत है, जो ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक साझेदारी, समुद्री रणनीति और बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था में अपनी भूमिका को मजबूत करने पर केंद्रित है।

ऑस्ट्रेलिया से यूरेनियम, इंडोनेशिया के साथ समुद्री एवं बंदरगाह सहयोग और न्यूजीलैंड के साथ आर्थिक रिश्तों का विस्तार आने वाले वर्षों में भारत की रणनीतिक स्थिति को नई मजबूती दे सकता है। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि इन समझौतों का जमीनी क्रियान्वयन कितनी तेजी से होता है और वे क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को किस हद तक प्रभावित करते हैं।

## बिहार की नई पहल : खाली घर बनेंगे कमाई का जरिया

जन जन विचार  
... पटना

पर्यटन केवल ऐतिहासिक स्मारकों और प्राकृतिक स्थलों तक सीमित नहीं रह गया है। आज के दौर में पर्यटक स्थानीय संस्कृति, पारंपरिक खानपान, रीति-रिवाज और लोगों की जीवनशैली को भी करीब से जानना चाहते हैं। इसी

सोच को आगे बढ़ाते हुए बिहार सरकार ने 'मुख्यमंत्री होमस्टे प्रोत्साहन योजना' शुरू की है।

यह योजना राज्य के पर्यटन को नई दिशा देने के साथ-साथ स्थानीय लोगों, विशेषकर ग्रामीण परिवारों, महिलाओं और युवाओं के लिए आय का नया स्रोत बनने जा रही है। सरकार ने पहले चरण में 16 जिलों के 34 प्रमुख पर्यटन स्थलों

को इस योजना में शामिल किया है। इस योजना के तहत पर्यटन स्थलों के आसपास रहने वाले लोग अपने घर के खाली कमरों को पर्यटकों के ठहरने के लिए होमस्टे के रूप में विकसित कर सकेंगे।

इससे पर्यटकों को होटल जैसी औपचारिक व्यवस्था के बजाय एक स्थानीय परिवार के साथ रहने का अवसर मिलेगा, जहां वे बिहार की

संस्कृति, खानपान, लोक परंपराओं और आत्मीय मेहमाननवाजी का वास्तविक अनुभव प्राप्त कर सकेंगे।

योजना का सबसे आकर्षक पक्ष इसकी वित्तीय सहायता है। सरकार की ओर से प्रत्येक कमरे के विकास के लिए 2.5 लाख रुपए तक की सहायता। एक होमस्टे में अधिकतम आठ कमरों को स्वीकृति। प्रति लाभार्थी अधिकतम 10 लाख रुपए

तक का अनुदान।

महिलाओं और 18 से 25 वर्ष के युवाओं को प्रति कमरे 25 हजार रुपए अतिरिक्त सहायता।

स्वयं सहायता समूह को भी अतिरिक्त एक लाख रुपए तक का प्रोत्साहन।

यह आर्थिक सहयोग ग्रामीण परिवारों को पर्यटन व्यवसाय से जुड़ने के लिए प्रेरित करेगा।

## पृष्ठ 1 का शेषांश...

## सरकार की 'वेट एंड वॉच' रणनीति

कि केंद्र सरकार फिलहाल 'वेट एंड वॉच' की रणनीति पर काम कर रही है। सरकार संभवतः यह संदेश देना चाहती है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में केवल सड़क पर उतरकर या अनशन के दबाव में नीतिगत फैसले नहीं लिए जा सकते। यदि सरकार हर आंदोलन के दबाव में झुकती दिखाई दे, तो भविष्य में यह एक राजनीतिक परंपरा बन सकती है।

दूसरा बड़ा कारण आंदोलन की राजनीतिक दिशा भी मानी जा रही है। शुरुआत में यह आंदोलन परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता और कथित नीट अनियमितताओं तक सीमित था, लेकिन अब इसे कई विपक्षी दलों का खुला समर्थन

मिल रहा है। कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, आम आदमी पार्टी सहित कई दलों के नेताओं ने सार्वजनिक रूप से आंदोलन का समर्थन किया है। ऐसे में भाजपा इसे केवल छात्र आंदोलन नहीं, बल्कि एक व्यापक राजनीतिक अभियान के रूप में भी देख सकती है।

सरकार का एक पक्ष यह भी हो सकता है कि परीक्षा प्रणाली और कथित अनियमितताओं से जुड़े मामलों की जांच पहले से चल रही है। ऐसे में वह किसी मंत्री के इस्तीफे जैसे राजनीतिक निर्णय को आंदोलन के दबाव में लेने के बजाय संस्थागत प्रक्रिया पर भरोसा जताना चाहती हो।

हालांकि, सरकार की चुप्पी पर सवाल भी उठ रहे हैं। आलोचकों का कहना है कि यदि देश के एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद लगातार अनशन पर बैठे हैं और उनकी सेहत बिगड़ रही है, तो सरकार को कम से कम संवाद की पहल

करनी चाहिए। लोकतंत्र में असहमति का समाधान संवाद से ही निकलता है, मौन से नहीं।

अब सबकी निगाहें 20 जुलाई के 'चलो संसद' अभियान पर टिकी हैं। यदि इस आंदोलन को व्यापक जनसमर्थन मिलता है, तो सरकार पर राजनीतिक और नैतिक दबाव बढ़ सकता है। लेकिन यदि इसका दायरा सीमित रहता है, तो सरकार की मौजूदा रणनीति सही साबित हो सकती है।

फिलहाल इतना स्पष्ट है कि यह केवल एक आंदोलन की कहानी नहीं, बल्कि सरकार की राजनीतिक रणनीति और विपक्ष की सक्रियता की भी परीक्षा है। आने वाले कुछ दिन तय करेंगे कि यह आंदोलन शिक्षा सुधार की दिशा में निर्णायक मोड़ लाता है या फिर राजनीतिक विमर्श तक ही सीमित रह जाता है।



# आधुनिक हिंदी कविता की बहुआयामी यात्रा : कविता बरास्ते कवि

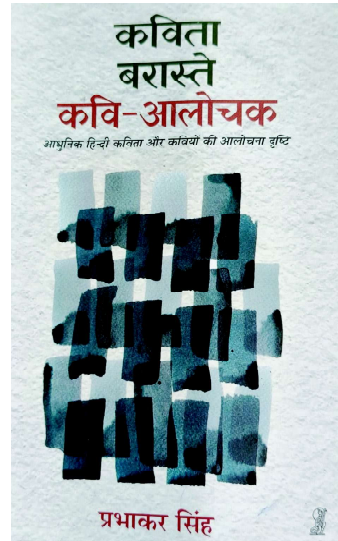
जन जन विचार  
...डॉ. मुकेश कुमार

हिंदी साहित्य की आलोचनात्मक परंपरा में ऐसी पुस्तकें विरल हैं जो कविता और आलोचना के अंतर्संबंधों को एक साथ समझने का गंभीर प्रयास करती हैं। हिंदी के प्रतिष्ठित आलोचक एवं साहित्य इतिहास के अध्येता प्रो. प्रभाकर सिंह द्वारा लिखित 'कविता बरास्ते कवि-आलोचक' आधुनिक हिंदी कविता और कवियों की आलोचना-दृष्टि' ऐसी ही एक महत्वपूर्ण कृति है। यह पुस्तक आधुनिक हिंदी कविता की विकास-यात्रा, उसके वैचारिक आधार, संवेदनात्मक विस्तार और कवियों द्वारा निर्मित सामाजिक - सांस्कृतिक आलोचनात्मक प्रतिमानों को समग्रता में समझने का अवसर प्रदान करती है। यह पुस्तक दो खंडों में विभाजित है। प्रथम खंड 'आधुनिक कविता के रास्ते' आधुनिक हिंदी कविता की ऐतिहासिक यात्रा को रेखांकित करता है। इसमें भारतेन्दु युग से लेकर समकालीन कविता तक के विविध चरणों का गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। दूसरा खंड 'कविता के सहयात्री आलोचक' शीर्षक से उन कवियों की आलोचना-दृष्टि का विवेचन करता है जिन्होंने केवल कविता ही नहीं लिखी, बल्कि कविता के स्वरूप, सरोकार और मूल्यांकन के संबंध में भी महत्वपूर्ण चिंतन प्रस्तुत किया। इस खंड में अज्ञेय, मुक्तिबोध, विजयदेवनारायण साही, मलयज, अशोक वाजपेयी, राजेश जोशी तथा विजय कुमार जैसे कवियों के आलोचनात्मक अवदान का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है। पुस्तक का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि लेखक आधुनिक हिंदी कविता को केवल साहित्यिक विकास की प्रक्रिया के रूप में नहीं देखते, बल्कि उसे भारतीय समाज, संस्कृति और विचारधारा के व्यापक परिवर्तन से जोड़कर समझते हैं। प्रो. प्रभाकर सिंह का मानना है कि किसी भी साहित्यिक धारा को उसके सामाजिक और वैचारिक संदर्भों से पृथक करके नहीं समझा जा सकता। इसी कारण वे आधुनिकता, नवजागरण, राष्ट्रीय चेतना, लोकतांत्रिक मूल्यों और मनुष्य की स्वतंत्रता की आकांक्षा को कविता के विकासक्रम से जोड़ते हैं।

सबसे पहले आधुनिकता के तात्पर्य को समझेंगे- जब साहित्य में धर्म और ईश्वर के स्थान पर मनुष्य मात्र का अध्ययन किया जाने लगा तो साहित्य का स्वरूप आधुनिक हो गया और साहित्य राजदरबारों एवं धार्मिक मठों से निकलकर किसानों के झोपड़ों की तरफ प्रवाहित हो गया तो साहित्य का स्वरूप आधुनिक हो गया। अब साहित्य में समाज सुधार नवजागरण के गहरे मूल्य स्थापित हो गये। अर्खंडित राष्ट्रीय चेतना एवं एकता की भावना स्थापित होने लगी। साहित्य में जब आधुनिकता आई तो प्रकृति में परिवर्तन, नारी में परिवर्तन और पुरुष की स्थिरता में परिवर्तन आया। देश, धर्म, ईश्वर आदि की नई-नई व्याख्या हुई, नई अनुभूति व नई संवेदना, नए उपमान, बिम्ब, प्रतीक, उपकरणों की खोज की गई। प्रभाकर सिंह 'कविता बरास्ते कवि आलोचक' पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं- आधुनिक कविता की अन्तर्यात्रा हिंदी नवजागरण के दौर से सतत गतिशील है। हिंदी नवजागरण जिसमें भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग और छायावाद की कविता प्रतिफलित होती है। आलोचक रामविलास शर्मा हिंदी नवजागरण के चार प्रस्थान मानते हैं जिनमें 1857 का सहसंग्राम, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग और छायावाद इस दौर के कवियों में भारतेन्दु हरिश्चंद्र, प्रताप नारायण मिश्र, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, जय शंकर

प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की कविता में नवजागरण की राष्ट्रीय चेतना मुक्ति के आयाम विद्यमान हैं। प्रगतिशील कविता 1936 से जिसका आरम्भ माना जाता है, आधुनिकता की सबसे सशक्त काव्य धारा है। अब बात नवजागरण पर कर लेते हैं कि नवजागरण है क्या देखिए - प्रभाकर सिंह अपनी पुस्तक में रामविलास शर्मा की परिभाषा को यहां उपस्थित करते हैं- किसी देश या उसके प्रदेश के सामाजिक - सांस्कृतिक आंदोलन को हम नवजागरण कहते हैं। नई चेतना, नए विचार, नए मूल्यों का उदय अर्थात् नवजागरण वह युगीन चेतना है जिसमें समाज, रूढ़ियों और प्राचीन मानसिकता से मुक्त होकर विवेक, मानवतावाद, सामाजिक सुधार, राष्ट्रीयता और आधुनिक मूल्यों की ओर अग्रसर होता है। यही कारण है कि हिंदी साहित्य इतिहास में प्रायः कहा जाता है - भारतेन्दु युग हिंदी नवजागरण का आधार है, द्विवेदी युग हिंदी नवजागरण का विस्तार है, छायावाद युग हिंदी नवजागरण का उन्मेष यहीं पूर्ण भावात्मक एवं सांस्कृतिक प्रस्फुटन। नवजागरण का प्रारंभ बंगाल से माना गया है और इसका कारण ब्रिटिश शासन की प्रथम व्यवस्था का संपर्क बना। खूब टकराहट हुई। साहित्य, भाषा विशेष के बोलने वालों की चेतना में आने वाले परिवर्तन का प्रतिबिंब होता है। हिंदी भाषियों में नवजागरण और आधुनिक बोध क्रमशः विकसित हुआ तथा इस बात पर काफी बहस होती रही 19 सदी में भारतीय जनमानस में जो परिवर्तन हुआ यह अंग्रेजों की देन है अथवा नहीं। अंग्रेजों के भारत में आगमन से भारतीय जनमानस प्रभावित हुआ इसका सीधा सा प्रमाण यह है कि इस देश के जिस भाग से उनका प्रभुत्व स्थापित हुआ उसी भाग से भारतीयों में नवजागरण और आधुनिकता की चेतना का प्रारंभ हुआ। लेखक की यह स्थापना विशेष ध्यान आकर्षित करती है कि भारतीय नवजागरण की पहली चेतना महात्मा बुद्ध के उपदेशों में परिलक्षित होती है। यह विचार भारतीय इतिहास और संस्कृति की एक दीर्घ परम्परा की ओर संकेत करता है। सामान्यतः भारतीय नवजागरण की चर्चा उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलनों के संदर्भ में की जाती है, किन्तु प्रो. प्रभाकर सिंह इस चेतना के मूल स्रोतों को कहीं अधिक प्राचीन धरातल पर खोजते हैं। उनके अनुसार महात्मा बुद्ध ने मनुष्य को कर्म, विवेक, तर्क, करुणा और स्वतंत्र चिंतन का जो संदेश दिया, वह भारतीय समाज में नवचेतना का आरंभिक रूप था। बुद्ध ने जन्माधारित ऊंच-नीच, रूढ़ियों और कर्मकाण्डों का विरोध करते हुए मनुष्य की गरिमा को प्रतिष्ठित किया। यही तत्व आगे चलकर आधुनिक नवजागरण और लोकतांत्रिक चेतना के आधार बने। यह दृष्टिकोण पुस्तक को केवल साहित्यिक आलोचना तक सीमित नहीं रहने देता, बल्कि उसे सांस्कृतिक और दार्शनिक विमर्श का भी हिस्सा बना देता है। लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि आधुनिक हिंदी कविता की जड़ें भारतीय चिंतन-परम्परा में गहराई तक फैली हुई हैं। आधुनिकता का अर्थ केवल पश्चिमी प्रभाव ग्रहण करना नहीं है, बल्कि अपनी परम्परा के भीतर निहित प्रगतिशील और मानवीय तत्त्वों को पहचानना भी है।

पुस्तक के प्रथम खंड में भारतेन्दु युग से आरंभ होकर आधुनिक हिंदी कविता की क्रमिक यात्रा का विश्लेषण किया गया है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक जागरूकता और भाषा के प्रति आग्रह दिखाई देता है। इस युग की विशिष्ट काव्य प्रवृत्ति समस्यापूर्ति है। समस्यापूर्ति अर्थात् एक पंक्ति



में एक समस्या दी जाती है, वो समस्या का समाधान मंच से प्रदान किया जाता है। नए कवियों को मौका देकर उन्हें निखारा जाता है। जिसने उस पंक्ति को पूरा किया उसकी पंक्ति मानी जाएगी समस्यापूर्ति। लेखक यह दर्शाते हैं कि आधुनिक हिंदी कविता के लिए जिस बौद्धिक भूमि की आवश्यकता थी, उसका निर्माण भारतेन्दु युग में प्रारम्भ हुआ। इसके बाद द्विवेदी युग में भाषा, विचार और नैतिकता का जो अनुशासन विकसित हुआ, उसने कविता को एक नई दिशा प्रदान की। इस युग की विशिष्ट काव्य प्रवृत्ति इतिवृत्तात्मकता है। प्रबंध काव्य को लेकर इस युग की साहित्य में पहचान है। प्रभाकर सिंह जी लिखते हैं- द्विवेदी युग का नाम लेते ही हमारे जेहन में जो नाम उभरता है वह है महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके द्वारा संपादित 'सरस्वती पत्रिका' सरस्वती सही मायने में हिंदी की जातीय पत्रिका थी। भाषा सुधार से लेकर, हिंदी गद्य-पद्य में खड़ी बोली के प्रसार, साहित्य में रीतिवादी मूल्यों का विरोध और नये सामाजिक-सांस्कृतिक जागरण के अभियान को यह पत्रिका बखूबी पूरा करती है। छायावाद की चर्चा करते हुए प्रो. प्रभाकर सिंह उसकी केवल भावुक या रहस्यवादी व्याख्या नहीं करते, बल्कि उसमें निहित व्यक्ति-चेतना, आत्मबोध और स्वतंत्रता की आकांक्षा को रेखांकित करते हैं। छायावादी कवियों ने मनुष्य के अंतर्जगत को अभिव्यक्ति प्रदान की और उसकी संवेदनशीलता को नए आयाम दिए। इस प्रकार छायावाद आधुनिक मनुष्य की खोज का एक महत्वपूर्ण चरण बनकर सामने आता है और राष्ट्रीय मुक्ति और स्वाधीनता से इसका गहरा रिश्ता है। प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के विश्लेषण में लेखक संतुलित दृष्टि अपनाते हैं। वे किसी एक धारा को श्रेष्ठ और दूसरी को कमतर सिद्ध करने के बजाय दोनों की ऐतिहासिक आवश्यकता और साहित्यिक उपलब्धियों पर विचार करते हैं। प्रगतिवाद ने कविता को सामाजिक यथार्थ और वर्गीय संघर्षों से जोड़ा, जबकि प्रयोगवाद ने भाषा, संरचना और अभिव्यक्ति के नए आयामों की खोज की। नई कविता में लघु मानव की संवेदनाओं को गहराई से उकेरा गया है। समकालीन कविता विभिन्न विमर्शों को साथ लेकर चलती है। पूंजीवाद, युद्ध, आतंक, विस्थापन तथा साम्प्रदायिकता जैसी समस्याओं से संघर्षरत है। पुस्तक का दूसरा खंड विशेष रूप से उल्लेखनीय है क्योंकि इसमें कवियों की आलोचना-दृष्टि का विश्लेषण किया गया है। हिंदी साहित्य में अनेक ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने केवल सृजन ही नहीं किया, बल्कि आलोचना के क्षेत्र में भी नई दृष्टियां विकसित कीं। लेखक ने इन कवि-आलोचकों के योगदान को गंभीरता से समझने का प्रयास किया है। अज्ञेय के संदर्भ में यह बताया गया है कि उन्होंने आधुनिकता,

व्यक्तित्व की स्वतंत्रता और सृजनात्मक स्वायत्तता को विशेष महत्व दिया। उनकी आलोचना-दृष्टि कविता को किसी निश्चित वैचारिक खांचे में बांधने के बजाय उसकी कलात्मक और मानवीय संभावनाओं को समझने पर बल देती है। अज्ञेय के चिंतन ने हिंदी कविता को आधुनिक बौद्धिकता से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुक्तिबोध की आलोचना-दृष्टि का विवेचन पुस्तक का एक महत्वपूर्ण आकर्षण है। मुक्तिबोध ने साहित्य को सामाजिक यथार्थ और मानवीय संघर्षों से जोड़कर देखा। उनकी आलोचना में आत्मसंघर्ष, वैचारिक प्रतिबद्धता और रचनात्मक ईमानदारी का विशेष महत्त्व है। लेखक ने मुक्तिबोध के विचारों को आधुनिक हिंदी आलोचना की एक निर्णायक उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया है। विजयदेवनारायण साही का चिंतन हिंदी आलोचना को एक नई बौद्धिक ऊंचाई प्रदान करता है। साही ने साहित्य को केवल विचारधारा के आधार पर नहीं, बल्कि उसकी रचनात्मक जटिलता और मानवीय अर्थवत्ता के आधार पर समझने का प्रयास किया। इसी प्रकार मलयज की आलोचना-दृष्टि में संवेदना, आत्मीयता और सूक्ष्म विश्लेषण की शक्ति दिखाई देती है। अशोक वाजपेयी की आलोचना-दृष्टि कला, संस्कृति और सौंदर्यबोध के व्यापक संदर्भों से जुड़ी हुई है। वे कविता को मनुष्य की रचनात्मक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक अस्मिता का माध्यम मानते हैं। उनकी आलोचना में साहित्य और अन्य कलाओं के बीच गहरा संवाद दिखाई देता है। राजेश जोशी की आलोचना-दृष्टि समकालीन जीवन की चुनौतियों से संबद्ध है। वे कविता को सामाजिक हस्तक्षेप और मानवीय सरोकारों की अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं। वहीं विजय कुमार का आलोचनात्मक चिंतन 80 के दशक के वैचारिक और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रश्नों पर गंभीर विचार प्रस्तुत करता है। हिंदी कविता में आठवां दशक की नयी उर्वर भूमि लेकर आता है।

प्रभाकर सिंह की लेखन-शैली में इस पुस्तक की एक बड़ी विशेषता यह है कि वे जटिल साहित्यिक अवधारणाओं को सरल, स्पष्ट और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। उनका विवेचन न तो अनावश्यक दुरुहता का शिकार होता है और न ही सतही सरलीकरण का। वे तथ्यों, तर्कों और उदाहरणों के माध्यम से अपने निष्कर्षों को पुष्ट करते हैं। इसी कारण पुस्तक में विद्वत्ता और पठनीयता का सुंदर संतुलन दिखाई देता है। कविता बरास्ते कवि-आलोचक वस्तुतः आधुनिक हिंदी कविता की बहुआयामी यात्रा का प्रामाणिक दस्तावेज है। पुस्तक का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि लेखक ने आधुनिक हिंदी कविता को एक निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा है। वे यह मानते हैं कि कविता का इतिहास केवल साहित्यिक रूपों का इतिहास नहीं है, बल्कि मनुष्य की चेतना, संवेदना और संघर्षों का इतिहास भी है। यह पुस्तक कविता के इतिहास, उसके विकासक्रम, उसकी वैचारिक पृष्ठभूमि और कवि-आलोचकों की भूमिका को समग्रता में समझने का अवसर प्रदान करती है। निस्संदेह प्रभाकर सिंह की यह कृति आधुनिक हिंदी कविता और आलोचना के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण योगदान है। यह पुस्तक न केवल साहित्य के विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए उपयोगी है, बल्कि उन सभी पाठकों के लिए भी महत्वपूर्ण है जो कविता, आलोचना और भारतीय बौद्धिक परम्परा के संबंधों को गहराई से समझना चाहते हैं। अपने व्यापक अध्ययन, संतुलित दृष्टि और गंभीर विश्लेषण के कारण यह पुस्तक हिंदी आलोचना-जगत् में दीर्घकाल तक स्मरणीय बनी रहेगी।



# इंग्लैंड दौरे ने खोल दी टी-20 टीम की कमजोरियां

जन जन विचार

...सपोर्ट्स डेस्क

चार महीने पहले तक भारतीय क्रिकेट प्रशंसकों के लिए टी-20 विश्व कप की जीत गर्व का विषय थी। टीम को दुनिया की सबसे संतुलित और मजबूत टी-20 टीम माना जा रहा था। नए कप्तान श्रेयस अय्यर और मुख्य कोच गौतम गंभीर के नेतृत्व में भारतीय क्रिकेट के नए दौर की चर्चा हो रही थी। लेकिन ब्रिटेन दौरे ने इन उम्मीदों को गहरा झटका दिया।

आयरलैंड के खिलाफ 0-2 और इंग्लैंड के खिलाफ 0-4 की करारी हार ने केवल एक सीरीज नहीं गंवाई, बल्कि भारतीय टी-20 टीम की रणनीति, चयन प्रक्रिया, तकनीकी तैयारी और मानसिक मजबूती पर भी गंभीर सवाल खड़े कर दिए। बारिश के कारण पहला मुकाबला रद्द होने से भारत को जीत का अवसर भी कम मिला, लेकिन शेष मैचों में टीम कोई प्रभाव नहीं छोड़ सकी।

**विश्व कप विजेता टीम से इतना बड़ा बदलाव क्यों?**

विश्व कप जीत के बाद टीम में बड़े बदलाव किए गए। अनुभवी खिलाड़ियों की जगह नए चेहरों को मौका दिया गया और नेतृत्व में भी परिवर्तन हुआ। बदलाव किसी भी टीम के विकास का हिस्सा होते हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या ये बदलाव पर्याप्त तैयारी और स्पष्ट योजना के साथ किए गए?

लगातार बदलते टीम संयोजन ने खिलाड़ियों की भूमिकाओं को भी प्रभावित किया। किसी बल्लेबाज या गेंदबाज को लंबे समय तक एक निश्चित जिम्मेदारी नहीं



मिल सकी। इससे टीम का संतुलन लगातार बिगड़ता रहा।

**बल्लेबाजी : आक्रामकता थी, लेकिन परिस्थितियों की समझ नहीं**

इंग्लैंड की स्विंग और उछाल भरी पिचों पर भारतीय बल्लेबाजी पूरी तरह संघर्ष करती नजर आई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में तेज रन बनाने वाले कई बल्लेबाज अंतर्राष्ट्रीय स्तर की चुनौती के सामने टिक नहीं सके। शॉट खेलने की जल्दबाजी, तकनीकी गलतियां और परिस्थितियों के अनुरूप बल्लेबाजी न कर पाना पूरी श्रृंखला में दिखाई दिया।

आधुनिक टी-20 क्रिकेट केवल बड़े शॉट लगाने का खेल नहीं है। कठिन परिस्थितियों में विकेट बचाना, साझेदारी बनाना और पारी को परिस्थितियों के अनुसार आगे बढ़ाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

**गेंदबाजी में नहीं दिखी धार**

भारतीय गेंदबाजी भी अपेक्षित प्रभाव छोड़ने में असफल रही। नई गेंद से शुरुआती विकेट नहीं

मिले, मध्य ओवरों में रन गति पर नियंत्रण नहीं रहा और डेथ ओवरों में लगातार अतिरिक्त रन दिए गए। इंग्लैंड के बल्लेबाजों ने भारतीय गेंदबाजों की लाइन और लेंथ का पूरा फायदा उठाया।

टीम को अनुभवी खिलाड़ियों की कमी भी महसूस हुई। दबाव की परिस्थितियों में गेंदबाजी आक्रमण में वह आत्मविश्वास और अनुशासन नहीं दिखा, जिसकी अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में आवश्यकता होती है।

**फील्डिंग बनी सबसे कमजोर कड़ी**

टी-20 क्रिकेट में एक कैच, एक रन-आउट या कुछ रन बचाना भी मैच का परिणाम बदल सकता है। पूरे दौरे में भारतीय टीम ने कई आसान कैच छोड़े, रन-आउट के अवसर गंवाए और फील्डिंग में अपेक्षित चुस्ती नहीं दिखाई। मैदान पर खिलाड़ियों की शारीरिक भाषा भी कई मौकों पर दबाव में दिखाई दी।

यदि कोई टीम बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों में संघर्ष कर रही हो, तो उत्कृष्ट फील्डिंग उसे

मुकाबले में बनाए रख सकती है। भारत इस विभाग में भी पीछे रह गया।

**आईपीएल और अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट का अंतर**

इस दौरे ने एक बार फिर यह स्पष्ट किया कि घरेलू टी-20 लीग में सफलता और अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में निरंतर प्रदर्शन दो अलग-अलग चुनौतियां हैं।

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में हर टीम विपक्षी खिलाड़ियों का गहराई से विश्लेषण करती है। परिस्थितियां बदलती रहती हैं और खिलाड़ियों को तकनीकी रूप से अधिक सक्षम होना पड़ता है। केवल आक्रामक बल्लेबाजी या तेज रन बनाने की क्षमता सफलता की गारंटी नहीं बन सकती।

**टीम प्रबंधन के सामने अहम सवाल**

इस हार के बाद टीम प्रबंधन और चयनकर्ताओं के सामने कई महत्वपूर्ण प्रश्न हैं—

क्या टीम चयन में निरंतरता की कमी रही?

क्या युवा खिलाड़ियों को पर्याप्त तैयारी के साथ मौका मिला?

क्या अनुभवी खिलाड़ियों और नए खिलाड़ियों के बीच संतुलन सही था?

क्या विदेशी परिस्थितियों के अनुसार रणनीति बनाई गई?

क्या घरेलू प्रदर्शन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परखने की प्रक्रिया और मजबूत करने की जरूरत है?

इन सवालों के जवाब भविष्य की दिशा तय करेंगे।

**आगे की राह**

हर बड़ी टीम अपने कठिन दौर से सीखकर ही मजबूत बनती है। ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और अन्य सफल क्रिकेट देशों ने भी समय-समय पर असफलताओं के बाद अपनी रणनीति में बदलाव किया है।

भारतीय टीम के पास प्रतिभा की कमी नहीं है। आवश्यकता है—टीम चयन में स्पष्टता, खिलाड़ियों की निश्चित भूमिका, विदेशी परिस्थितियों के लिए विशेष तैयारी, तकनीकी प्रशिक्षण और मानसिक मजबूती पर अधिक ध्यान देने की।

इंग्लैंड में मिली 0-4 की हार भारतीय क्रिकेट के लिए केवल एक आंकड़ा नहीं है, बल्कि एक महत्वपूर्ण चेतावनी है। यह दौरा बताता है कि विश्व कप जीत के बाद भी निरंतर सुधार और सही रणनीति उतनी ही आवश्यक है जितनी प्रतिभा।

यदि भारतीय क्रिकेट इस हार से सही सबक लेता है, तो यही असफलता भविष्य की बड़ी सफलताओं की नींव बन सकती है। लेकिन यदि इन संकेतों को नजरअंदाज किया गया, तो विश्व क्रिकेट में शीर्ष स्थान बनाए रखना और कठिन होता जाएगा।

## पृष्ठ 1 का शेषांश...

### जब पंजाब के सिख योद्धा बने असम...

समाज के साथ गहरा संबंध विकसित किया। धीरे-धीरे उनकी आने वाली पीढ़ियां पूरी तरह असमिया समाज का हिस्सा बन गईं।

आज यह समुदाय स्वयं को 'असमिया सिख' के रूप में पहचानता है। उनकी भाषा, पहनावा, खान-पान और सामाजिक जीवन में असम और पंजाब-दोनों संस्कृतियों की सुंदर झलक दिखाई देती है।

यह भारत की 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना का जीवंत उदाहरण है।

#### 204 वर्ष पूरे होने पर होगा विशेष आयोजन

असमिया सिख संस्था द्वारा आयोजित इस तीन दिवसीय समारोह में इतिहास, संस्कृति और सामुदायिक एकता को केंद्र में रखा जाएगा।

कार्यक्रम के प्रमुख आकर्षण होंगे-204 वर्षों की ऐतिहासिक यात्रा का स्मरण, शहीद सिख सैनिकों को श्रद्धांजलि, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, सामुदायिक सम्मेलन, इतिहास और विरासत पर विशेष कार्यक्रम, राज्यभर तथा

अन्य प्रदेशों से आने वाले असमिया सिख परिवारों का मिलन।

आयोजकों के अनुसार यह केवल उत्सव नहीं, बल्कि अपनी जड़ों को याद करने और नई पीढ़ी को इतिहास से जोड़ने का अवसर होगा।

#### मुख्यमंत्री को दिया गया आमंत्रण

असमिया सिख संस्था के अध्यक्ष तथा असम सरकार के अल्पसंख्यक विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष राजबीर सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा को मुख्य अतिथि बनने का निमंत्रण दिया गया है। उनके कार्यक्रम के अनुसार आयोजन की तिथि तय की जाएगी।

आयोजन के लिए जिला प्रशासन, स्थानीय जनप्रतिनिधियों और संबंधित विभागों के साथ समन्वय कर सभी आवश्यक तैयारियां की जा रही हैं।

#### सांप्रदायिक सौहार्द का प्रतीक

असमिया सिख समुदाय केवल अपनी धार्मिक पहचान के कारण नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और सांप्रदायिक सद्भाव के लिए भी जाना जाता है।

दो सदियों से अधिक समय तक इस समुदाय ने असम की सांस्कृतिक परंपराओं को अपनाते हुए अपनी विरासत को

भी सुरक्षित रखा है। यही कारण है कि आज यह समुदाय असम की सामाजिक संरचना का एक सम्मानित और अभिन्न अंग माना जाता है।

#### नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा

आज जब दुनिया पहचान और संस्कृति के सवालों से जूझ रही है, तब असमिया सिख समुदाय यह संदेश देता है कि अपनी जड़ों को संभालते हुए भी स्थानीय समाज के साथ पूरी आत्मीयता से जुड़ा जा सकता है।

204 वर्षों की यह यात्रा केवल एक समुदाय की कहानी नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक एकता, सह-अस्तित्व और पारस्परिक सम्मान की प्रेरक गाथा है।

चापरमुख में होने वाला यह तीन दिवसीय समारोह इतिहास को याद करने का अवसर भर नहीं होगा, बल्कि उन वीर सिख सैनिकों के प्रति श्रद्धांजलि भी होगा, जिन्होंने असम की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व समर्पित किया और अंततः इसी धरती को अपना घर बना लिया। असमिया सिख समुदाय की यह 204 वर्षीय यात्रा हमें यह सिखाती है कि संस्कृति की सबसे बड़ी ताकत प्रेम, विश्वास और साझी विरासत में होती है। यही विरासत आने वाली पीढ़ियों को भी एकता और भाईचारे का संदेश देती रहेगी।



# हेमा मालिनी की बायोपिक में दीपिका होंगी नई 'ड्रीम गर्ल'

जन जन विचार  
... अयोध्या

हिंदी सिनेमा की 'ड्रीम गर्ल' हेमा मालिनी ने फिल्म जगत में अपने शानदार 60 वर्ष पूरे कर एक ऐसा मुकाम हासिल किया है, जो बहुत कम कलाकारों को नसीब होता है। अभिनय, शास्त्रीय नृत्य, राजनीति और सामाजिक जीवन-हर क्षेत्र में उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है। ऐसे में यदि भविष्य में उनकी बायोपिक बनती है, तो स्वाभाविक रूप से यह जानने की उत्सुकता बढ़ जाती है कि पर्दे पर उनकी भूमिका कौन निभाएगा।

हाल ही में आयोजित उनके डायमंड जुबली समारोह में जब यह सवाल पूछा गया कि क्या दीपिका पादुकोण उनकी भूमिका निभाने के लिए उपयुक्त होंगी, तो हेमा मालिनी ने बिना किसी हिचकिचाहट के उनका नाम लिया। उन्होंने कहा कि यदि दीपिका चाहें तो यह भूमिका बखूबी निभा सकती हैं। उनके अनुसार दीपिका बेहद



प्रतिभाशाली, खूबसूरत और प्रभावशाली अभिनेत्री हैं।

यह पसंद केवल औपचारिक प्रशंसा नहीं लगती। हेमा मालिनी

और दीपिका पादुकोण के बीच वर्षों पुराना जुड़ाव भी है। 2017 में प्रकाशित हेमा मालिनी की जीवनी 'हेमा मालिनी : बिर्योन्ड द ड्रीम गर्ल' के लोकार्पण के लिए भी दीपिका को ही आमंत्रित किया गया था। इतना ही नहीं, दीपिका की पहली फिल्म 'ओम शांति ओम' में उनका किरदार 'शांतिप्रिया' काफी हद तक हेमा मालिनी की स्टार छवि से प्रेरित माना गया था। फिल्म में उन्हें भी 'ड्रीम गर्ल' कहा गया था, जो हेमा मालिनी की पहचान का पर्याय बन चुका है।

यदि अभिनय क्षमता की बात करें तो दीपिका उन चुनिंदा अभिनेत्रियों में हैं जिन्होंने ऐतिहासिक, भावनात्मक और जीवनीपरक किरदारों को प्रभावशाली ढंग से निभाया है। उनकी स्क्रीन प्रेजेंस, नृत्य कौशल और भावनात्मक अभिव्यक्ति उन्हें इस भूमिका के लिए मजबूत दावेदार बनाती है। यही कारण है कि जब हेमा मालिनी ने स्वयं उनका नाम लिया, तो इस संभावना ने फिल्म

प्रेमियों की उत्सुकता और बढ़ा दी।

हेमा मालिनी का सफर किसी एक अभिनेत्री की सफलता की कहानी नहीं, बल्कि भारतीय सिनेमा के स्वर्णिम दौर का इतिहास है। 'सपनों का सौदागर', 'सीता और गीता', 'शोले', 'ड्रीम गर्ल', 'सत्ते पे सत्ता' और 'बागबान' जैसी फिल्मों से उन्होंने कई पीढ़ियों को प्रभावित किया। अभिनय के साथ-साथ भरतनाट्यम की साधना और सार्वजनिक जीवन में उनकी सक्रिय भूमिका उनकी बहुआयामी पहचान को और मजबूत बनाती है।

यदि उनकी जीवन यात्रा पर फिल्म बनती है, तो वह केवल एक सुपरस्टार की कहानी नहीं होगी, बल्कि भारतीय सिनेमा के छह दशकों के बदलाव, संघर्ष और सफलता का भी दस्तावेज होगी। अब देखना दिलचस्प होगा कि क्या भविष्य में निर्माता इस महत्वाकांक्षी परियोजना को आकार देते हैं और क्या सचमुच दीपिका पादुकोण बड़े पर्दे पर नई 'ड्रीम गर्ल' बनकर दर्शकों के सामने आती हैं।

## निखार के लिए अपनाइए चावल का देसी नुस्खा

महंगे स्किनकेयर उत्पादों और विदेशी ब्यूटी ट्रेंड्स के दौर में भारतीय रसोई का साधारण चावल भी त्वचा की देखभाल का बेहतरीन साथी बन सकता है। दादी-नानी के घरेलू नुस्खों में चावल का आटा और चावल का पानी वर्षों से त्वचा को साफ, मुलायम और ताजगी भरा बनाए रखने के लिए इस्तेमाल होता रहा है। हालांकि, यह किसी त्वचा रोग का इलाज नहीं है और हर व्यक्ति की त्वचा अलग होती है, इसलिए किसी भी घरेलू उपाय को अपनाने से पहले पैच टेस्ट करना जरूरी है।

### चावल के पानी का प्राकृतिक टोनर

चावल धोने के बाद बचा पानी 20-30 मिनट तक रखकर छान लें। इसे स्प्रे बोतल में भरकर चेहरे पर टोनर की तरह लगाएं। इससे त्वचा को ताजगी और हल्की नमी मिल सकती है।

### चावल के आटे का स्क्रब

दो चम्मच चावल का आटा, एक चम्मच दही और एक चम्मच शहद मिलाकर हल्के हाथों से 1-2 मिनट तक मसाज करें। यह मृत त्वचा कोशिकाओं को हटाने में मदद कर सकता है। संवेदनशील त्वचा पर जोर से स्क्रब न करें।

### फेस पैक के आसान विकल्प

चावल + एलोवेरा जेल : बेजान त्वचा को ताजगी देने के लिए।

चावल + दूध : त्वचा को मुलायम महसूस कराने के लिए।

## कुंदरू को कहें 'यम्मी'! बच्चों के लिए बनाएं क्रिस्पी मसाला फ्राई



अगर आपका बच्चा कुंदरू का नाम सुनते ही मुंह बना लेता है, तो अब चिंता छोड़िए। पोषक तत्वों से भरपूर इस हरी सब्जी को थोड़ा नया स्वाद और कुरकुरा अंदाज देकर बच्चों की पसंद बनाया जा सकता है। फाइबर, विटामिन-सी और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर कुंदरू पाचन को बेहतर बनाने के साथ शरीर को जरूरी पोषण भी देता है।

### क्रिस्पी कुंदरू मसाला फ्राई

**सामग्री :** 250 ग्राम कुंदरू (पतले लंबे टुकड़ों में कटा हुआ), 2 बड़े चम्मच बेसन, 1 बड़ा चम्मच चावल का आटा, ½ छोटा चम्मच हल्दी, ½ छोटा चम्मच धनिया पाउडर, ½ छोटा चम्मच लाल मिर्च (स्वादानुसार), चुटकीभर अजवाइन, नमक स्वादानुसार, 1-2 बड़े चम्मच तेल।

**बनाने की विधि :** कटे हुए कुंदरू में बेसन, चावल का आटा, सभी मसाले और थोड़ा-सा तेल मिलाकर अच्छी तरह कोट करें। अब इसे तवे पर कम तेल में, एयर फ्रायर या ओवन में सुनहरा और कुरकुरा होने तक पकाएं। तैयार फ्राई को टमाटर सॉस, दही डिप या पुदीने की चटनी के साथ परोसें।

कुंदरू का यह कुरकुरा और हल्का मसालेदार स्वाद बच्चों को फ्रेंच फ्राइज जैसा अनुभव देता है। स्वाद और सेहत का यह बेहतरीन मेल पूरे परिवार के लिए मानसून का एक हेल्दी स्नैक भी बन सकता है।

## मानसून में त्वचा की देखभाल

बारिश का मौसम जहां गर्मी से राहत देता है, वहीं बढ़ी हुई नमी और उमस त्वचा संबंधी कई समस्याओं को भी जन्म देती है। इस मौसम में दाद, खुजली, फंगल संक्रमण और अन्य त्वचा रोग तेजी से फैलते हैं। ऐसे में थोड़ी-सी सावधानी आपको इन परेशानियों से बचा सकती है।

विशेषज्ञों के अनुसार, मानसून में सबसे महत्वपूर्ण बात है शरीर को साफ और पूरी तरह सूखा रखना। नहाने के तुरंत बाद बिना शरीर सुखाए कपड़े पहन लेना त्वचा पर नमी बनाए रखता है, जिससे फंगल संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए हमेशा साफ और सूखे तौलिए से शरीर को अच्छी तरह पोंछने के बाद ही कपड़े पहनें।

दूसरी महत्वपूर्ण सावधानी है दूसरों के तौलिये, रुमाल या कपड़ों का इस्तेमाल न करना। फंगल संक्रमण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक आसानी से फैल सकता है। इसलिए अपनी व्यक्तिगत वस्तुओं का ही उपयोग करें और उन्हें नियमित रूप से धोकर धूप में सुखाएं।

मानसून में सूती और ढीले कपड़े पहनना बेहतर रहता है, क्योंकि ये पसीना जल्दी सोख लेते हैं और त्वचा को सांस लेने का मौका देते हैं। यदि शरीर पर लगातार खुजली, लाल चकते या गोल दाग दिखाई दें, तो घरेलू उपचार के बजाय त्वचा रोग विशेषज्ञ से सलाह लेना उचित है।



**জন জন বিচাৰ**  
সপ্তাহৰ চিন্তা  
সমস্যাই মানুহক দুৰ্বল  
নকৰে; সমস্যাৰ সন্মুখীন  
হোৱাৰ সাহসেই মানুহক  
শক্তিশালী কৰি তোলে।

# বাইজৰ কথা বাইজৰ মাজলৈ জন জন বিচাৰ

Guwahati, 17 July, 2026 Friday :: শুক্ৰবাৰ, আহাৰ, গুৰু, চতুৰ্থী, শকাব্দ ১৯৪৮

ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ পানী বন্ধ  
হ'ব নেকি, চীনৰ  
'মেডগ ডেম'ক লৈ  
উদ্বেগ - পৃষ্ঠা-১০



## অসম বাজেট ২০২৬ : উন্নয়নৰ নতুন দিশ নে ঋণৰ বোজা ?

**জন জন বিচাৰ**  
...গুৱাহাটী

অসম বিধানসভাত বিত্তমন্ত্রী জয়ন্ত মল্ল বৰুৱাই ২০২৬-২৭ বিত্তীয় বৰ্ষৰ বাবে তেওঁৰ প্ৰথমখন বাজেট দাখিল কৰিছে। এই বাজেট কেৱল এজন নতুন বিত্তমন্ত্ৰীৰ প্ৰথম বাজেটেই নহয়, মুখ্যমন্ত্রী ডঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মা নেতৃত্বাধীন চৰকাৰৰ দ্বিতীয় কাৰ্যকালৰো প্ৰথম পূৰ্ণাংগ বাজেট। সৰ্বমুঠ ১.৫৭ লাখ কোটি টকাৰ এই বাজেটে ৰাজ্যখনৰ উন্নয়ন, সামাজিক সুৰক্ষা, আন্তঃগাঁথনি, শিক্ষা, স্বাস্থ্য আৰু আত্মনিৰ্ভৰ ৰাজহ ব্যৱস্থাৰ এক সুদূৰপ্ৰসাৰী ৰূপৰেখা দাঙি ধৰিছে।

এই বাজেটৰ মূল লক্ষ্য হৈছে- উন্নয়নৰ গতি বজাই ৰাখি অসমক অধিক অৰ্থনৈতিকভাৱে শক্তিশালী আৰু বিনিয়োগৰ বাবে আকৰ্ষণীয় ৰাজ্য হিচাপে গঢ়ি তোলা।

**অৰ্থনীতিৰ দ্ৰুত উত্থানৰ দাবী**  
বাজেটত উল্লেখ কৰা অনুসৰি ২০২৬-২৭ বৰ্ষত অসমৰ মুঠ ৰাজ্যিক ঘৰুৱা উৎপাদন জি এছ ডি পি প্ৰায় ৮.৭১ লাখ কোটি টকালৈ বৃদ্ধি পাব বুলি অনুমান কৰা হৈছে। নামমাত্ৰ হিচাপত ইয়াৰ বাৎসৰিক বৃদ্ধিৰ হাৰ প্ৰায় ১৬ শতাংশ।

একেদৰে, ভাৰতৰ মুঠ ঘৰুৱা উৎপাদনত অসমৰ অংশীদাৰিত্ব ২০১৬-১৭ চনৰ ১.৬৫ শতাংশৰ পৰা ২.০৯ শতাংশলৈ বৃদ্ধি পোৱাটো চৰকাৰে অৰ্থনৈতিক অগ্ৰগতিৰ এক উল্লেখযোগ্য নিদৰ্শন বুলি দাবী কৰিছে।

ৰাজ্যৰ মুৰিপিছু আয়ও যথেষ্ট বৃদ্ধি পাইছে। দহ বছৰৰ পূৰ্বে যত মুৰিপিছু আয় প্ৰায় ৬০ হাজাৰ টকা আছিল, বৰ্তমান সেয়া বৃদ্ধি পাই ১.৮৫,৪২৯ টকালৈ উঠি পৰিছে।

**কেন্দ্ৰীয় সাহায্যৰ ওপৰত এতিয়াও অধিক নিৰ্ভৰতা**

অৰ্থনৈতিক উন্নয়নৰ দাবীৰ মাজতো ৰাজ্যখন এতিয়াও কেন্দ্ৰীয় অনুদান আৰু সাহায্যৰ ওপৰত যথেষ্ট নিৰ্ভৰশীল। বাজেট অনুসৰি, ২০২৬-২৭ বৰ্ষত চৰকাৰে ব্যয় কৰা প্ৰতিটো ১ টকাৰ ভিতৰত প্ৰায় ৬৪ পইচা কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰৰ পৰা আহিব।

এই পৰিস্থিতিৰ পৰা ওলাই আহিবলৈ ৰাজ্য চৰকাৰে ২০৩১ চনৰ ভিতৰত নিজৰ আভ্যন্তৰীণ ৰাজহৰ অংশ ৩৬ শতাংশৰ পৰা ৫০

১.৫৭ লাখ কোটি টকাৰ বাজেটে কলৈ লৈ যাব অসমক ?



শতাংশলৈ বৃদ্ধি কৰাৰ লক্ষ্য নিৰ্ধাৰণ কৰিছে। ইয়াৰ বাবে কৰ সংগ্ৰহ, উদ্যোগ বৃদ্ধি আৰু বিনিয়োগ আকৰ্ষণৰ ওপৰত বিশেষ গুৰুত্ব দিয়া হৈছে।

**বেতন-পেঞ্চনতেই অধিকাংশ ৰাজহ ব্যয়**

চৰকাৰী কৰ্মচাৰীৰ বেতন, অৱসৰপ্ৰাপ্তসকলৰ পেঞ্চন আৰু ঋণৰ সুদ পৰিশোধ-এই তিনিটা খণ্ডতেই ৰাজহ ব্যয়ৰ প্ৰায় ৬৩ শতাংশ খৰচ হ'ব।

ইয়াৰ অৰ্থ হৈছে চৰকাৰৰ হাতত উন্নয়নমূলক নতুন আঁচনি ৰূপায়ণৰ বাবে উপলব্ধ সম্পদৰ ওপৰত স্বাভাৱিকভাৱেই চাপ থাকিব।

**শিক্ষাখণ্ডত সৰ্বাধিক বিনিয়োগ**  
চৰকাৰে শিক্ষাখণ্ডক বিশেষ অগ্ৰাধিকাৰ দিছে।

বিদ্যালয় শিক্ষাৰ বাবে ১৮,৮৭০ কোটি টকা

বিদ্যালয় আৰু উচ্চশিক্ষা মিলি ২২,৬৬৭ কোটি টকা

এই ব্যয় ৰাজ্যখনৰ মুঠ বাজেটৰ প্ৰায় ১৪.৫ শতাংশ।

শিক্ষাৰ মান উন্নয়ন, বিদ্যালয়ৰ আন্তঃগাঁথনি শক্তিশালীকৰণ, নতুন শিক্ষানীতি ৰূপায়ণ আৰু দক্ষ মানৱ সম্পদ গঢ়ি তোলাত এই ধন ব্যয় হ'ব।

**পথ-দলং আৰু মূলধনী বিনিয়োগত গুৰুত্ব**

ৰাজ্য চৰকাৰে আন্তঃগাঁথনি উন্নয়নক বাজেটৰ অন্যতম মূল স্তম্ভ হিচাপে নিৰ্ধাৰণ কৰিছে।

পথ আৰু দলঙৰ বাবে ১০,৭৪৫ কোটি টকা ধাৰ্য কৰা হৈছে।

ইয়াৰ উপৰিও ২০২৬-২৭ বৰ্ষত মূলধনী ব্যয় ২৯,৪৫৫ কোটি টকা ধাৰ্য কৰা হৈছে আৰু চৰকাৰে প্ৰতিবছৰে কমেও ১০ শতাংশকৈ মূলধনী বিনিয়োগ বৃদ্ধি কৰাৰ প্ৰতিশ্ৰুতি দিছে।

এই বিনিয়োগে ভৱিষ্যতে উদ্যোগ, পৰিবহণ, কৃষি আৰু পৰ্যটন খণ্ডত বহুগুণ প্ৰভাৱ পেলাব বুলি আশা কৰা হৈছে।

**অসম মালা ৪.০ আৰু বৃহৎ আন্তঃগাঁথনি বিপ্লৱ**

বাজেটত আন্তঃগাঁথনি উন্নয়নৰ বাবে কেইবাটাও বৃহৎ আঁচনি ঘোষণা কৰা হৈছে।

অসম মালা ৪.০ৰ অধীনত ৮০০ কিলোমিটাৰ নতুন পথ নিৰ্মাণ

ব্যয় ধাৰ্য ১০,০০০ কোটি টকা

ইয়াৰ উপৰিও কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰৰ সহায়ত ৫৫ হাজাৰ কোটি টকাৰো অধিক আন্তঃগাঁথনি প্ৰকল্প চলি আছে।

ইয়াৰ ভিতৰত আছে- গুৱাহাটী ৰিং ৰোড, শিলচৰ উচ্চগতি পথ, গহপুৰ-নুমলীগড় ব্ৰহ্মপুত্ৰ সুৰংগ এই প্ৰকল্পসমূহে ৰাজ্যৰ যোগাযোগ ব্যৱস্থা আৰু বিনিয়োগৰ পৰিৱেশ অধিক শক্তিশালী কৰিব।

**১৮টা মুখ্য আঁচনিৰে উন্নয়নৰ নতুন ৰণনীতি**  
এইবাৰৰ বাজেট অষ্টাদশ

মুকুটৰ উন্নয়নী মালা শীৰ্ষক ১৮খন মুখ্য আঁচনিৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি প্ৰস্তুত কৰা হৈছে।

ইয়াৰ অন্তৰ্গত ক্ষেত্ৰসমূহ হল- নিযুক্তি, সামাজিক সুৰক্ষা, স্বাস্থ্য, বিদ্যুৎ, পথ, ভূমিৰ অধিকাৰ, পৰ্যটন, কৃষি, ডিৱাগড়ক কেন্দ্ৰ কৰি নতুন ৰাজধানী অঞ্চলৰ উন্নয়ন।

চৰকাৰৰ মতে, এই আঁচনিসমূহেই আগন্তুক বছৰসমূহত অসমৰ উন্নয়নৰ মূল চালিকাশক্তি হ'ব।

**সামাজিক সুৰক্ষাৰ আঁচনিত ৬,০০০ কোটিতকৈ অধিক**

জনকল্যাণমূলক আঁচনিসমূহৰ বাবে চৰকাৰে ৬,০০০ কোটি টকাৰো অধিক ধাৰ্য কৰিছে।

ইয়াৰ ভিতৰত আছে- অৰুণোদয়, নিযুক্ত মইনা, নিযুক্ত বাবু, ধান খেতিয়কক সহায়।

এই আঁচনিসমূহে মহিলা, শিক্ষাৰ্থী, নিবনুৱা যুৱক-যুৱতী আৰু কৃষকক পোনপটীয়া আৰ্থিক সহায় আগবঢ়াব।

**শিশু, মহিলা আৰু পৰিৱেশৰ বাবে পৃথক বাজেট**

এইবাৰৰ বাজেটৰ এক উল্লেখযোগ্য দিশ হৈছে অন্তৰ্ভুক্তিমূলক বাজেট ব্যৱস্থা।

**শিশু বাজেট : ১৯,১৯৯ কোটি টকা, মুঠ ব্যয়ৰ ৮.৮৫ শতাংশ**

**মহিলা বাজেট : ৩০০খন আঁচনি, ১২,১৬০ কোটি টকা**

**সেউজ বাজেট : ৮,৬৪৮**

কোটি টকা

মূলতঃ বান নিয়ন্ত্ৰণ, জলবায়ু পৰিৱৰ্তন আৰু পৰিৱেশ সংৰক্ষণ বিশেষকৈ বানে বহুৰি ক্ষতিগ্ৰস্ত হোৱা অসমৰ বাবে এই ব্যয় যথেষ্ট তাৎপৰ্যপূৰ্ণ বুলি ধৰা হৈছে।

**বিত্তীয় ঘাটতি নিয়ন্ত্ৰণত**

চৰকাৰে ২০২৬-২৭ বৰ্ষত ২৬,১৮৬ কোটি টকাৰ বিত্তীয় ঘাটতিৰ লক্ষ্য নিৰ্ধাৰণ কৰিছে, যি জি এছ ডি পি ১৩ শতাংশ।

এই হাৰ বিত্তীয় দায়বদ্ধতা আইনত নিৰ্ধাৰিত সীমাৰ ভিতৰতে আছে।

**ঋণ বৃদ্ধি: উদ্বেগৰ বিষয়**

অসমৰ মুঠ ঋণৰ পৰিমাণ ক্ৰমাৎ বৃদ্ধি পাইছে।

২০১৯ চনত: ৫৫,০০৮ কোটি টকা

২০২৫ চনত: ১.৬২ লাখ কোটি টকা

বৰ্তমান ঋণ জি এছ ডি পিৰ প্ৰায় ২৫ শতাংশ, যি আইনগত ৩২ শতাংশ সীমাৰ তলত আছে যদিও, ভৱিষ্যতে ঋণ পৰিচালনা চৰকাৰৰ বাবে এক গুৰুত্বপূৰ্ণ প্ৰত্যাহ্বান হৈ থাকিব।

এই বাজেটত একেলগে তিনিটা স্পষ্ট দিশ দেখা যায়-

বৃহৎ আন্তঃগাঁথনি নিৰ্মাণ

সামাজিক কল্যাণমূলক ব্যয় অব্যাহত ৰখা

ৰাজ্যৰ নিজা ৰাজহ বৃদ্ধি কৰাৰ প্ৰচেষ্টা

কিন্তু ইয়াৰ লগে লগে কেন্দ্ৰীয় অনুদানৰ ওপৰত অধিক নিৰ্ভৰতা, বেতন-পেঞ্চনত বিপুল ব্যয় আৰু ক্ৰমবৰ্ধমান ঋণৰ বোজাই চৰকাৰৰ আগত ভৱিষ্যতৰ বিত্তীয় প্ৰত্যাহ্বানৰো ইংগিত দিছে।

অসম বাজেট ২০২৬-২৭ কেৱল আয়-ব্যয়ৰ হিচাপ নহয়; ই ৰাজ্যখনৰ আগন্তুক উন্নয়নৰ এক বিস্তৃত ৰণনীতি। শিক্ষা, পথ-দলং, সামাজিক সুৰক্ষা, কৃষি, মহিলা আৰু শিশুৰ কল্যাণ, পৰিৱেশ সংৰক্ষণ আৰু বৃহৎ আন্তঃগাঁথনিৰ ওপৰত বিশেষ গুৰুত্ব দি চৰকাৰে উন্নয়নক অধিক গতিশীল কৰাৰ চেষ্টা কৰিছে।

এতিয়া লক্ষ্য কৰিবলগীয়া বিষয় হল-ঘোষিত আঁচনি আৰু বৃহৎ প্ৰতিশ্ৰুতিসমূহ কিমান দক্ষতাৰে বাস্তৱায়িত হয়। কাৰণ বাজেটৰ সফলতা কেৱল ঘোষণা বা আবণ্টনত নহয়, ইয়াৰ সুফল জনসাধাৰণৰ দুৱাৰমুখলৈ কিমান দ্ৰুত আৰু ফলপ্ৰসূত্ৰভাৱে পৌছায়, তাৰ ওপৰতে নিৰ্ভৰ কৰিব।



# ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ পানী বন্ধ হ'ব নেকি, চীনৰ 'মেডগ ডেম'ক লৈ উদ্বেগ

উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ জল-নিৰাপত্তা, কৃষি আৰু ৰাষ্ট্ৰীয় সুৰক্ষাক কেন্দ্ৰ কৰি নতুন চিন্তা

জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

তিব্বতৰ য়াৰলুং ছাংপো নদীৰ ওপৰত বিশ্বৰ সৰ্ববৃহৎ জলবিদ্যুৎ প্ৰকল্প নিৰ্মাণ আৰম্ভ কৰিছে চীনে। এই নদীয়েই অৰুণাচল প্ৰদেশত চিয়াং শচিহাংগ আৰু অসমৰ বুকুত ব্ৰহ্মপুত্ৰ নামেৰে বৈ আহে। ফলত চীনৰ এই বৃহৎ ডেম প্ৰকল্পক লৈ ভাৰতত পুনৰ বৃদ্ধি পাইছে জল-নিৰাপত্তা, পৰিৱেশ, বান নিয়ন্ত্ৰণ আৰু কৌশলগত সুৰক্ষাৰ উদ্বেগ।

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, বৰ্তমানলৈকে চীনে নদীখনৰ গতিপথ সলনি কৰাৰ কোনো আনুষ্ঠানিক ঘোষণা কৰা নাই। কিন্তু নদীৰ উজনি অংশত বৃহৎ জলাধাৰ নিৰ্মাণ হলে পানীৰ প্ৰবাহ নিয়ন্ত্ৰণ কৰাৰ ক্ষমতা যথেষ্ট বৃদ্ধি পাব, যাৰ প্ৰভাৱ ভৱিষ্যতে ভাৰতৰ উজনি আৰু নামনি অঞ্চলত অনুভূত হ'ব পাৰে।

চীনৰ এই প্ৰকল্প তিব্বতৰ মেডগ কাউণ্টিৰ বিখ্যাত গ্ৰেট বেণ্ড



অঞ্চলত নিৰ্মাণ কৰা হৈছে। এই ঠাইতেই য়াৰলুং ছাংপো নদীয়ে তীব্ৰ 'ছ' আকৃতিৰ বাঁক লৈ অৰুণাচল প্ৰদেশৰ দিশে বৈ আহে। ভাৰতৰ গেলিং, নৰবুলিং আদি সীমান্ত অঞ্চল এই স্থানৰ অতি ওচৰত অৱস্থিত।

চীনৰ প্ৰধানমন্ত্ৰী লি কিয়াং এই প্ৰকল্পক শতিকাৰ অন্যতম বৃহৎ জলবিদ্যুৎ প্ৰকল্প বুলি অভিহিত কৰিছে।

উপলব্ধ তথ্য অনুসৰি প্ৰকল্পত পাঁচটা কেন্দ্ৰে জলবিদ্যুৎ কেন্দ্ৰ নিৰ্মাণ কৰা হ'ব।

বছৰি প্ৰায় ৩০০ বিলিয়ন কিলোৱাট-ঘণ্টা বিদ্যুৎ উৎপাদনৰ লক্ষ্য ধৰা হৈছে।

প্ৰকল্পটোৰ সম্ভাৱ্য ব্যয় প্ৰায় ১.২ ট্ৰিলিয়ন ইউৰান প্ৰায় ১৬৭ বিলিয়ন আমেৰিকান ডলাৰ।

ব্যয়ৰ দিশৰ পৰা এইটো বিশ্বৰ সৰ্ববৃহৎ জলবিদ্যুৎ প্ৰকল্প হিচাপে বিবেচিত হৈছে।

ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ পানী ভাৰতলৈ বন্ধ হৈ যাব নেকি?

এই প্ৰশ্নই বৰ্তমান দেশজুৰি ব্যাপক আলোচনা সৃষ্টি কৰিছে। জল বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, চীনে

ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ পানী সম্পূৰ্ণৰূপে বন্ধ কৰি ৰাখিব নোৱাৰে।

কাৰণ- অৰুণাচল প্ৰদেশ আৰু অসমত প্ৰৱেশ কৰাৰ পিছত নদীখনে মৌচুমী বৰষুণৰ বিশাল পানী লাভ কৰে।

ইয়াৰ লগত ডিবাং, লোহিত, সুবনশিৰী, মানাহ, ধনশিৰী আদিকে ধৰি বহু উপনদীৰ পানী সংযুক্ত হয়।

ফলত ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ অধিকাংশ পানী ভাৰতৰ ভিতৰতে সংযোজিত হয়।

কিন্তু বিশেষজ্ঞসকলে একে সময়তে সতৰ্ক কৰি দিছে যে ডেমৰ জৰিয়তে শুকান বতৰত পানীৰ প্ৰবাহ নিয়ন্ত্ৰণ বা হঠাতে অধিক পৰিমাণে পানী এৰি দিয়াৰ সম্ভাৱনা থাকিলে নিম্নভাগৰ অঞ্চলত প্ৰতিকূল পৰিস্থিতি সৃষ্টি হ'ব পাৰে।

ভাৰতৰ দৃষ্টিত এই প্ৰকল্প কেৱল এটা জলবিদ্যুৎ আঁচনি নহয়, ই এক কৌশলগত আৰু ৰাষ্ট্ৰীয় সুৰক্ষাৰ বিষয়।

অৰুণাচল প্ৰদেশৰ মুখ্যমন্ত্ৰী পেমা খাণ্ডুয়ে এই প্ৰকল্পক সম্ভাৱ্য

'বাটৰ বম' বুলি অভিহিত কৰি উদ্বেগ প্ৰকাশ কৰিছে। তেওঁৰ মতে, বৃহৎ জলাধাৰ ভৰোৱাৰ সময়ত নদীৰ স্বাভাৱিক প্ৰবাহ কমি যাব পাৰে আৰু আকস্মিকভাৱে অধিক পানী এৰি দিলে সীমান্তৱৰ্তী অঞ্চল আৰু অসমত বানৰ আশংকা বৃদ্ধি পাব পাৰে।

ভূ-তাত্ত্বিক অধ্যয়নত প্ৰকাশ পাইছে যে প্ৰকল্পটোৰ তলত সক্ৰিয় ফল্ট লাইন আছে। বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, পূব হিমালয় অঞ্চলত ভূমিকম্পীয় সক্ৰিয়তা অধিক হোৱাৰ বাবে-ডেমৰ ভিত্তি, সুৰংগ, পথ, সেতু আদি আন্তঃগাঁথনি ভৱিষ্যতে বিশেষ বিপদৰ সন্মুখীন হ'ব পাৰে।

অসমৰ কৃষি, মৎস্য পালন, নৌ-যোগাযোগ, জীৱবৈচিত্ৰ্য, খোৱাপানী আৰু অৰ্থনীতিৰ সৈতে ব্ৰহ্মপুত্ৰ অগাংগিভাৱে জড়িত। সেয়েহে নদীখনৰ স্বাভাৱিক প্ৰবাহত যিকোনো বৃহৎ পৰিৱৰ্তনে ৰাজ্যখনৰ লাখ লাখ মানুহৰ জীৱন-জীৱিকাত প্ৰভাৱ পেলাব পাৰে।

## নাজিৰাৰ বিধায়ক ময়ূৰ বৰগোহাঁইক আটছাৰ সম্বৰ্ধনা, চাহ শ্ৰমিকৰ সমস্যা সমাধানৰ দাবী



জন জন বিচাৰ

...নাজিৰা

৯৭ নং নাজিৰা বিধানসভা সমষ্টিৰ নৱনিৰ্বাচিত বিধায়ক ময়ূৰ বৰগোহাঁইক চাহ জনজাতি ছাত্ৰ সন্থা (আটছা)ৰ নাজিৰা শাখাই তেওঁৰ বাসগৃহত সম্বৰ্ধনা জনায়।

সম্বৰ্ধনা অনুষ্ঠানত আটছাৰ শিৱসাগৰ জিলা সমিতিৰ সম্পাদক ধৰম কুমাৰ দাস, সাংস্কৃতিক সম্পাদক অতুল কুৰ্মী, ব্ৰীড়া সম্পাদক অমৰজিৎ গড়, নাজিৰা শাখাৰ সভাপতি সঞ্জয় গোৱালা, সম্পাদক ভূপেন ঘাটোৱাৰকে ধৰি শাখা আৰু উপ-শাখাৰ বহু বিষয়ববীয়া উপস্থিত থাকে।

ইয়াৰ পিছত বিধায়কগৰাকীৰ সৈতে অনুষ্ঠিত সৌহাৰদ্যপূৰ্ণ

আলোচনাত নাজিৰা সমজিলাৰ চাহ বাগিচাৰ শ্ৰমিকসকলৰ বিভিন্ন সমস্যা আৰু আটছাৰ দীৰ্ঘদিনীয়া দাবীসমূহ উত্থাপন কৰা হয়।

আলোচনাত চাহ জনগোষ্ঠীক জনজাতিৰ মৰ্যাদা প্ৰদান, শ্ৰমিকৰ মজুৰি বৃদ্ধি, গ্ৰেচুইটি, জৰাজীৰ্ণ শ্ৰমিক আৱাস পুনৰ নিৰ্মাণ, স্বাস্থ্যসেৱা আৰু বিশুদ্ধ খোৱা পানীৰ ব্যৱস্থাকে ধৰি বিভিন্ন বিষয় স্থান পায়। বিধায়ক ময়ূৰ বৰগোহাঁইয়ে চাহ শ্ৰমিকসকলৰ সমস্যা সমাধানৰ বাবে সুপৰিকল্পিত আৰু ফলপ্ৰসূ পদক্ষেপ গ্ৰহণৰ আশ্বাস প্ৰদান কৰে।

শিৱসাগৰত জাপানীজ

এনকেফেলাইটিছ-সদৃশ

ৰোগত ৩৩ জন আক্ৰান্ত

এনকেফেলাইটিছ আৰু এনকেফেলাইটিছ-সদৃশ ৰোগত মুঠ ৩৩ জন লোক আক্ৰান্ত হোৱাৰ তথ্য পোহৰলৈ আহিছে। অৱশ্যে, এই ৰোগত এতিয়ালৈকে কোনো লোকৰ মৃত্যু হোৱা নাই বুলি জিলা স্বাস্থ্য বিভাগে জানিবলৈ দিছে।

স্বাস্থ্য বিভাগৰ তথ্য অনুসৰি, খেলুৱা স্বাস্থ্য খণ্ডত সৰ্বাধিক ১১ জন, ডিমৌত ৬ জন, গেলেকীত ৫ জন, গৌৰীসাগৰত ৫ জন, কালুগাঁৱত ৫ জন আৰু মৰাবজাৰ স্বাস্থ্য খণ্ডত ১ জন আক্ৰান্ত হৈছে।

ৰোগৰ সংক্ৰমণ নিয়ন্ত্ৰণৰ বাবে জিলা স্বাস্থ্য বিভাগে বিভিন্ন এলেকাত ফগিং, আঁঠুৰা ঔষধিকৰণ, মহ নিয়ন্ত্ৰণ অভিযান আৰু ব্যাপক সজাগতামূলক কাৰ্যসূচী চলাই আছে।

স্বাস্থ্য বিভাগে জনসাধাৰণক মহৰ কামোৰৰ পৰা সুৰক্ষিত থাকিবলৈ, বাসস্থানৰ চৌপাশ পৰিষ্কাৰ-পৰিচ্ছন্ন কৰি ৰাখিবলৈ আৰু জ্বৰ বা এনকেফেলাইটিছৰ লক্ষণ দেখা দিলে বিলম্ব নকৰি নিকটৱৰ্তী স্বাস্থ্য কেন্দ্ৰ বা চিকিৎসকৰ পৰামৰ্শ গ্ৰহণ কৰিবলৈ আহ্বান জনাইছে।

### এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

১৭ জুলাই, ২০২৬ৰ পৰা ২৩ জুলাই, ২০২৬লৈ

**মেঘ:** মানসিক অস্থিৰতাই কিছু অসুবিধাৰ সৃষ্টি কৰিব পাৰে। কৰ্মক্ষেত্ৰত যিকোনো গুৰুত্বপূৰ্ণ সিদ্ধান্ত সাৱধানে লওক। স্বাস্থ্যৰ ক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ।

**বৃষ:** আৰ্থিক বিষয়ত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰাটো প্ৰয়োজন। মানসিকভাৱে কিছু উদ্বিগ্নতা অনুভৱ কৰিব পাৰে। ভ্ৰমণৰ যোগে আনন্দ আৰু উপকাৰ লাভৰ সম্ভাৱনা আছে।

**মিথুন:** আকস্মিক ব্যয় বৃদ্ধি পাব পাৰে। দৰকাৰী সিদ্ধান্ত চিন্তা-চৰ্চা কৰি গ্ৰহণ কৰক। কৰ্মক্ষেত্ৰত সুনাম আৰু স্বীকৃতি লাভৰ সম্ভাৱনা আছে।

**কৰ্কট:** মন কিছু অস্থিৰ থাকিব পাৰে। চেষ্টাত সাময়িক বাধাৰ সন্মুখীন হ'ব পাৰে। প্ৰেমৰ ক্ষেত্ৰত সুখদ অভিজ্ঞতা লাভ কৰিব।

**সিংহ:** খৰচ বৃদ্ধি পাব পাৰে, গতিকে ব্যয় নিয়ন্ত্ৰণত ৰাখক। মানসিক উদ্বিগ্নতা অনুভৱ কৰিব পাৰে। কৰ্মক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভৰ সম্ভাৱনা আছে।

**কন্যা:** আৰ্থিক দিশ শুভ। অদৰকাৰী ব্যস্ততা বৃদ্ধি পাব পাৰে। যিকোনো সিদ্ধান্ত গ্ৰহণৰ আগতে ভালদৰে বিবেচনা কৰক।

**তুলা:** আৰ্থিক ব্যয়ৰ ক্ষেত্ৰত সংযম অৱলম্বন কৰক। কৰ্মক্ষেত্ৰত সুনাম আৰু সফলতা লাভ কৰিব। পিতৃৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি বিশেষ যত্ন লওক।

**বৃশ্চিক:** কৰ্মক্ষেত্ৰত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰাটো জৰুৰী। দূৰ ভ্ৰমণৰ সময়ত সতৰ্ক থাকক। স্বাস্থ্যৰ ক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ।

**ধনু:** পিতৃৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি যত্ন লওক। আয়ৰ ক্ষেত্ৰত কিছু বাধা আহিব পাৰে। কৰ্মক্ষেত্ৰত অদৰকাৰী ব্যস্ততা বৃদ্ধি পাব পাৰে।

**মকৰ:** দৈনন্দিন কাম-কাজত সাময়িক বাধা আহিব পাৰে। ধৈৰ্য আৰু অধ্যৱসায় সফলতা কঢ়িয়াই আনিব। কৰ্মক্ষেত্ৰত অদৰকাৰী বাদ-বিবাদৰ পৰা আঁতৰি থাকক।

**কুম্ভ:** পতি-পত্নীৰ মাজত ভুল বুজাবুজিৰ সৃষ্টি হ'ব পাৰে। স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি সচেতন হওক। যিকোনো গুৰুত্বপূৰ্ণ সিদ্ধান্ত সাৱধানে গ্ৰহণ কৰক।

**মীন:** স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি যত্ন লওক। খৰচ বৃদ্ধি পাব পাৰে। ভাগ্যৰ সহায়ত বিভিন্ন কামত সফলতা লাভৰ সম্ভাৱনা আছে।

-হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী

অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা

যোগাযোগ: ৯৮৫৪০২৬৭৭৯



# জুবীন গাৰ্গলে মৰণোত্তৰ ‘সঙ্গীত সুধাকৰ’ সন্মান

জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

অসমীয়া সংগীতৰ ইতিহাসত জুবীন গাৰ্গ কেৱল এজন গায়ক বা সুৰকাৰ নহয়, তেওঁ আছিল এক সাংস্কৃতিক আন্দোলনৰ নাম। নিজৰ কণ্ঠ, সুৰ, গীত আৰু অভিনয়ে তেওঁ অসমীয়া সংগীতক দেশ-বিদেশত এক নতুন পৰিচয় দিছিল। তেওঁৰ অকাল প্ৰয়াণে সমগ্ৰ অসমক শোকস্তব্ধ কৰি তুলিছিল। সেই মহান শিল্পীগৰাকীৰ অসামান্য অৱদানৰ স্বীকৃতি হিচাপে অসম সাহিত্য সভাই তেওঁক মৰণোত্তৰভাৱে ‘সঙ্গীত সুধাকৰ’ উপাধিৰে সন্মানিত কৰাৰ সিদ্ধান্ত গ্ৰহণ কৰিছে।

৩০ জুলাইত গুৱাহাটীত সন্মান প্ৰদান

অসম সাহিত্য সভাৰ ঘোষণা অনুসৰি অহা ৩০ জুলাই, ২০২৬ তাৰিখে গুৱাহাটীৰ সঙ্গীতাচাৰ্য লক্ষ্মীৰাম বৰুৱা সদনত আয়োজন কৰা এক বিশেষ অনুষ্ঠানত এই সন্মান আনুষ্ঠানিকভাৱে প্ৰদান কৰা হ'ব। সভাৰ সভাপতি ডঃ বসন্ত কুমাৰ গোস্বামীয়ে এই উপাধি মৰণোত্তৰভাৱে জুবীন গাৰ্গৰ পৰিয়ালৰ হাতত অৰ্পণ কৰিব।

অনুষ্ঠানত সভাৰ বিষয়ববীয়া, সাহিত্যিক, শিল্পী, সংস্কৃতিপ্ৰেমী আৰু জুবীন গাৰ্গৰ পৰিয়ালৰ সদস্যসকল উপস্থিত থাকিব। তেওঁৰ পিতৃ কপিল ঠাকুৰ, পত্নী গৰিমা শইকীয়া গাৰ্গ, ভগ্নী ডাঃ পমী বৰঠাকুৰ

## অসমীয়া সংস্কৃতিৰ এক যুগৰ স্বীকৃতি



আদিক বিশেষভাৱে আমন্ত্ৰণ জনোৱা হৈছে।

কেৱল সন্মান নহয়, এক সাংস্কৃতিক শ্ৰদ্ধাঞ্জলি

এই অনুষ্ঠান কেৱল উপাধি প্ৰদানত সীমাবদ্ধ নাথাকিব। জুবীন গাৰ্গৰ স্মৃতিত সংগীত, নৃত্য আৰু নাট্য প্ৰদৰ্শনেৰে এক সাংস্কৃতিক সন্ধিয়াৰ আয়োজন কৰা হ'ব। তেওঁৰ জনপ্ৰিয় গানসমূহ নতুন প্ৰজন্মৰ শিল্পীয়ে পৰিবেশন কৰিব।

ইয়াৰ উপৰিও, জুবীন গাৰ্গৰ জীৱন, শিল্প-চিন্তা, মানৱীয় মূল্যবোধ

আৰু অসমীয়া সমাজত তেওঁৰ প্ৰভাৱক লৈ এখন ৰাষ্ট্ৰীয় পৰ্যায়ৰ আলোচনা সভা অনুষ্ঠিত হ'ব। উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ বিভিন্ন বিশ্ববিদ্যালয়ৰ গৱেষকসকলে উপস্থাপন কৰা গৱেষণা-পত্ৰসমূহ পিছত গ্ৰন্থাকাৰে প্ৰকাশ কৰাৰো সিদ্ধান্ত লোৱা হৈছে।

বিশ্বৰ আগত জুবীনৰ গান

অসম সাহিত্য সভাই জুবীন গাৰ্গৰ নিৰ্বাচিত গীতসমূহ ইংৰাজী, হিন্দী আৰু বাংলা ভাষালৈ অনুবাদ কৰাৰো পৰিকল্পনা গ্ৰহণ কৰিছে। ইয়াৰ জৰিয়তে অসমীয়া সংগীত

আৰু জুবীন গাৰ্গৰ সৃষ্টিক দেশ-বিদেশৰ অধিক সংখ্যক শ্ৰোতাৰ কাষলৈ লৈ যোৱাৰ চেষ্টা চলোৱা হ'ব।

জুবীন গাৰ্গ-এটা নাম, এটা যুগ  
জুবীন গাৰ্গে পপ, লোকসংগীত, আধুনিক, চলচ্চিত্ৰ সংগীত, ভক্তিমূলক গীত আদি বিভিন্ন ধাৰাত সমানে সফলতা অৰ্জন কৰিছিল। তেওঁৰ সুৰত অসমৰ মাটি, মানুহ, ভাষা, প্ৰেম, বিৰহ আৰু সমাজৰ স্পন্দন একেলগে ধ্বনিত হৈছিল। তেওঁ অসমীয়া সংগীতক

আধুনিক ৰূপ দি নতুন প্ৰজন্মক নিজৰ ভাষাৰ সংগীতৰ সৈতে সংযোগ ঘটাইছিল।

অসমৰ বাহিৰতো তেওঁ বহু ভাষাৰ চলচ্চিত্ৰ আৰু সংগীত জগতত নিজৰ প্ৰতিভাৰ স্বাক্ষৰ ৰাখিছিল। তেনেদৰে তেওঁ অসমীয়া সংস্কৃতিৰ এক শক্তিশালী দূত হিচাপে পৰিচিত হৈছিল।

কিয় গুৰুত্বপূৰ্ণ এই সন্মান?

‘সঙ্গীত সুধাকৰ’ উপাধি কেৱল এজন শিল্পীক দিয়া সন্মান নহয়; ই অসমীয়া সংগীত আৰু সংস্কৃতিৰ প্ৰতি আজীৱন নিষ্ঠাৰ স্বীকৃতি। জুবীন গাৰ্গৰ দৰে এজন বহুমুখী শিল্পীক এই সন্মানে সন্মানিত কৰাটো অসমীয়া সমাজৰ সাংস্কৃতিক স্মৃতি সংৰক্ষণৰ ক্ষেত্ৰতো এক উল্লেখযোগ্য পদক্ষেপ।

তেওঁৰ গান আজিও লাখ লাখ অনুৰাগীৰ হৃদয়ত জীৱন্ত। সময় পাৰ হ'লেও তেওঁৰ সৃষ্টি, কণ্ঠ আৰু আদৰ্শ নতুন প্ৰজন্মক অনুপ্রাণিত কৰি থাকিব।

জুবীন গাৰ্গৰ শাৰীৰিক অনুপস্থিতি অসমীয়াৰ বাবে অপূৰণীয় ক্ষতি। কিন্তু তেওঁৰ সুৰ, গীত আৰু সাংস্কৃতিক অৱদান চিৰকাল অম্লান হৈ থাকিব। অসম সাহিত্য সভাৰ এই মৰণোত্তৰ ‘সঙ্গীত সুধাকৰ’ সন্মান সেই অমৰ শিল্পীগৰাকীৰ প্ৰতি সমগ্ৰ অসমীয়া জাতিৰ গভীৰ শ্ৰদ্ধা আৰু কৃতজ্ঞতাৰ এক ঐতিহাসিক প্ৰকাশ।

## জৈৱিক কৃষিপণ্যৰে বিশ্ববজাৰত ত্ৰিপুৰাৰ সফল পদক্ষেপ

### ডুবাইলৈ ৰপ্তানি নিমখীয়া নেমু, কালিকাছা চাউল আৰু কুইন আনাৰস

জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ ৰাজ্যসমূহে এতিয়া কেৱল প্ৰাকৃতিক সৌন্দৰ্য বা সাংস্কৃতিক ঐতিহ্যৰ বাবেই নহয়, কৃষিক্ষেত্ৰতো আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় পৰ্যায়ত নিজৰ পৰিচয় সুদৃঢ় কৰি তুলিছে। এই ক্ষেত্ৰত ত্ৰিপুৰাই পুনৰ এক উল্লেখযোগ্য সফলতা অৰ্জন কৰিছে।

ৰাজ্যখনৰ জৈৱিক নিমখীয়া নেমু, কালিকাছা সুগন্ধি চাউল আৰু কুইন আনাৰস ডুবাইলৈ ৰপ্তানি কৰা হৈছে। এই সামগ্ৰীসমূহ উপসাগৰীয় দেশসমূহত বিশ্বখ্যাত লুলু ৰিটেলৰ বিপণন নেটৱৰ্কৰ জৰিয়তে বিক্ৰী কৰা হ'ব। এই পদক্ষেপে ত্ৰিপুৰাৰ কৃষিজাত সামগ্ৰীৰ বাবে আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় বজাৰৰ দুৱাৰ অধিক মুকলি কৰাৰ লগতে কৃষকসকলৰ বাবে নতুন

আয়ৰ সম্ভাৱনাও সৃষ্টি কৰিছে।

এই বাৰৰ ৰপ্তানি চালানত অন্তৰ্ভুক্ত হৈছে-

১,৩০০টা জৈৱিক সুগন্ধি নেমু, ১৮২ কিলোগ্ৰাম জৈৱিক কালিকাছা সুগন্ধি চাউল, ৩৫০টা কুইন আনাৰস  
এই সামগ্ৰীসমূহ ৰাজ্যখনৰ বিভিন্ন কৃষক উৎপাদক কোম্পানী (এফ.পি.চি.)ৰ জৰিয়তে সংগ্ৰহ কৰা হৈছে।

খোৱাই জিলাৰ বৰামুৰা কৃষক উৎপাদক কোম্পানী-এ নেমু যোগান ধৰিছে।

দক্ষিণ ত্ৰিপুৰাৰ তৃষণ কৃষক উৎপাদক কোম্পানী-এ কালিকাছা চাউল প্ৰস্তুত কৰিছে।

গোমতী জিলাৰ খৰা কৃষক উৎপাদক কোম্পানী-এ কুইন আনাৰস যোগান ধৰিছে।

ইয়াৰ জৰিয়তে স্পষ্ট হৈছে যে সংগঠিত কৃষক গোটসমূহে এতিয়া বিশ্ববজাৰৰ সৈতে সফলভাৱে

সংযোগ স্থাপন কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে।

ত্ৰিপুৰাৰ কৃষি আৰু কৃষক কল্যাণ মন্ত্ৰী ৰতন লাল নাথে ৰপ্তানি চালান উদ্বোধন কৰি কয় যে এই সফলতা ৰাজ্যখনৰ কৃষক আৰু কৃষক উৎপাদক কোম্পানী-সমূহৰ কঠোৰ পৰিশ্ৰমৰ ফল।

তেওঁৰ মতে, লুলু ৰিটেলৰ দৰে আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় বিপণন ব্যৱস্থাত ত্ৰিপুৰাৰ জৈৱিক কৃষিপণ্য স্থান লাভ কৰাটো ৰাজ্যখনৰ বাবে গৌৰৱৰ বিষয়। ই বিশ্ববজাৰত ত্ৰিপুৰাৰ কৃষিজাত সামগ্ৰীৰ ওপৰত আস্থা বৃদ্ধি কৰাৰ লগতে কৃষকৰ আয় বৃদ্ধিৰ নতুন সুযোগ সৃষ্টি কৰিব।

শেহতীয়াকৈ ত্ৰিপুৰাই ১০ হাজাৰ কিলোগ্ৰাম জৈৱিক শুকান বাৰ্ডছ আই জলকীয়া জাৰ্মানীলৈ ৰপ্তানি কৰিছিল। এতিয়াৰ ডুবাই ৰপ্তানিয়ে ৰাজ্যখনৰ কৃষি ৰপ্তানিৰ যাত্ৰাক আৰু অধিক শক্তিশালী কৰিলে।

ৰাজ্য চৰকাৰে জৈৱিক কৃষিক উৎসাহিত কৰাৰ বাবে-

মূল্য সংযোজন, গুণগত মানৰ প্ৰমাণপত্ৰ, ব্ৰেণ্ডিং, আৰু বজাৰৰ

সৈতে শক্তিশালী সংযোগ-এই দিশসমূহত বিশেষ গুৰুত্ব আৰোপ কৰিছে।

আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় বজাৰত প্ৰৱেশৰ ফলত কৃষকে উন্নত মূল্য লাভ কৰিব।

IND 365 অসমne

IND 365  
ইয়া কী আৱাজ  
অসমৰ বাবে

ৰ বাবে

নগাঁও, জাগীৰোড, হোজাই

লংকা, কঠিয়াতলি, কামপুৰ

বৰপেটা, নলবাৰী

ৰ পৰা সংবাদদাতা বিচৰা হৈছে

IND 365  
ইয়া কী আৱাজ  
অসমৰ বাবে



## সম্পাদকীয় লক্ষ্যৰ পৰা আঁতৰি যোৱা আন্দোলন ?

যিকোনো গণতান্ত্ৰিক আন্দোলনৰ শক্তি থাকে তাৰ নৈতিক ভিত্তি, স্পষ্ট লক্ষ্য আৰু জনসমৰ্থনত। কিন্তু সময়ৰ লগে লগে বহু আন্দোলন এনে এক পৰ্যায়ত উপনীত হয়, যত মূল দাবীতকৈ আন্দোলনৰ ধৰণ আৰু তাৰ পাৰস্পৰ্য্যই অধিক গুৰুত্ব লাভ কৰে। সোনম বাঁচুকৰ অনশনক লৈও এতিয়া একেধৰণৰ প্ৰশ্ন উত্থাপিত হৈছে-আন্দোলনটোৱে নেকি নিজৰ মূল লক্ষ্যৰ পৰা আঁতৰি গৈছে?

আন্দোলনৰ আৰম্ভণি হৈছিল নীট পৰীক্ষাত সংঘটিত বুলি অভিযোগ উত্থাপিত হোৱা

অনিয়ম, প্ৰশ্নকাকত ফাঁহ আৰু শিক্ষা ব্যৱস্থাত জবাবদিহিতা নিশ্চিত কৰাৰ দাবীৰে। এই দাবীসমূহৰ প্ৰতি দেশবাসীৰ সহানুভূতি আৰু সমৰ্থনো আছিল। কিন্তু ক্ৰমে আন্দোলনৰ কেন্দ্ৰবিন্দু শিক্ষা সংস্কাৰৰ পৰা সৰি আহি অনশনৰ দৈৰ্ঘ্য, স্বাস্থ্যৰ অৱনতি, ৰাজনৈতিক সমৰ্থন আৰু 'চলো সংসদ'ৰ দৰে কাৰ্যসূচীৰ ওপৰত অধিক কেন্দ্ৰীভূত হোৱা দেখা গৈছে।

যেতিয়া আন্দোলনৰ মূল বিষয়বস্তুতকৈ আন্দোলনকাৰীৰ স্বাস্থ্যই সংবাদৰ মুখ্য বিষয় হৈ পৰে, তেতিয়া দাবীৰ তীক্ষ্ণতা কিছু পৰিমাণে হ্ৰাস হোৱাৰ আশংকা থাকে। আনহাতে বিভিন্ন ৰাজনৈতিক দলৰ সক্ৰিয় অংশগ্ৰহণেও আন্দোলনটোক একাংশৰ দৃষ্টিত ৰাজনৈতিক ৰূপ দিয়াৰ সুযোগ সৃষ্টি কৰে। ইয়াৰ ফলত মূল উদ্দেশ্য-শিক্ষা ব্যৱস্থাৰ স্বচ্ছতা আৰু

জবাবদিহিতাৰ দাবী-পিছপৰি যাব পাৰে।

ইয়াৰ অৰ্থ এইটো নহয় যে দাবীসমূহ অযৌক্তিক। বৰঞ্চ এই দাবীসমূহ আজিও সমানে গুৰুত্বপূৰ্ণ। কিন্তু লক্ষ্যত উপনীত হ'বলৈ আন্দোলনৰ কৌশল সময়ে সময়ে পুনৰ মূল্যায়ন কৰাটোও সমান প্ৰয়োজনীয়। গণতন্ত্ৰত সংলাপ, যুক্তি আৰু সাংবিধানিক পথেই স্থায়ী সমাধানৰ দুৱাৰ মুকলি কৰে।

সেয়ে এতিয়াৰ আটাইতকৈ ডাঙৰ প্ৰশ্ন হৈছে-আন্দোলনৰ লক্ষ্য চৰকাৰক জবাবদিহি কৰোৱা নে অনশনকেই আন্দোলনৰ একমাত্ৰ পৰিচয় কৰি তোলা? যদি মূল উদ্দেশ্য শিক্ষা ব্যৱস্থাৰ সংস্কাৰ, তেন্তে সেই লক্ষ্য পুনৰ কেন্দ্ৰস্থলত আনিব লাগিব। কাৰণ যিকোনো সফল আন্দোলনৰ পৰিচয় তাৰ সময়সীমাত নহয়, লক্ষ্য পূৰণত।

## এআই যুগত ভাৰতৰ শিক্ষা: সপোন, বৈষম্য আৰু নতুন প্ৰত্যাহ্বান

জন জন বিচাৰ

... বামেশ্বৰ শৰ্মা

কৃত্ৰিম বুদ্ধিমত্তা আজি কেৱল প্ৰযুক্তিৰ বিষয় নহয়; ই শিক্ষা, স্বাস্থ্য, কৃষি, উদ্যোগ, চৰকাৰী সেৱা-সকলো ক্ষেত্ৰতে নতুন যুগৰ সূচনা কৰিছে। ChatGPT, Gemini, Copilot আদিৰ দৰে এআই-ভিত্তিক সঁজুলিয়ে বিশ্বজুৰি কাম কৰাৰ ধৰণ সলনি কৰি আছে। এই পৰিস্থিতিত এটা গুৰুত্বপূৰ্ণ প্ৰশ্ন উত্থাপন হৈছে-ভাৰতৰ বিদ্যালয়সমূহ এআই যুগৰ বাবে সঁচাকৈয়ে সাজু নেকি?

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, এই প্ৰশ্নৰ উত্তৰ এতিয়াও সন্তোষজনক নহয়।

দুটা ভাৰতৰ কাহিনী

এফালে মহানগৰৰ উন্নত ব্যক্তিগত বিদ্যালয়ত পঢ়া শিক্ষাৰ্থীয়ে এআইৰ সহায়ত নতুন নতুন উদ্ভাৱন কৰি আছে। আনফালে, বহু চৰকাৰী বিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে এতিয়াও এআই কেনেকৈ ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে সেয়াও ভালদৰে নাজানে।

এই বৈষম্যই ভৱিষ্যতে ভাৰতৰ শিক্ষাক্ষেত্ৰত এক নতুন "AI Divide" সৃষ্টি কৰাৰ আশংকা বৃদ্ধি কৰিছে।

ডিজিটেল আন্তঃগাঁথনিৰ সংকট

ভাৰতত স্মাৰ্ট ক্লাছৰুমৰ কথা কোৱা হয় যদিও বাস্তৱ ছবি যথেষ্ট উদ্বেগজনক।

চৰকাৰী তথ্য অনুসৰি, প্ৰায় এক-তৃতীয়াংশ বিদ্যালয়ত ডিজিটেল সুবিধা নাই।

মাত্ৰ ৬৩ শতাংশ বিদ্যালয়ত কাৰ্যক্ষম কম্পিউটাৰ আছে।

কেৱল ৬৭ শতাংশ বিদ্যালয় ইণ্টাৰনেট সংযোগেৰে সংযুক্ত।

গ্ৰামাঞ্চল আৰু পিছপৰা ৰাজ্যসমূহত এই সমস্যা অধিক গভীৰ। বহু বিদ্যালয়ত কম্পিউটাৰ থাকিলেও সেয়া ব্যৱহাৰযোগ্য নহয় অথবা ইণ্টাৰনেট সংযোগ অত্যন্ত দুৰ্বল।

শিক্ষকসকলো সাজু নে?

এআই কেৱল ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ বাবে নহয়; শিক্ষকসকলকো নতুন দক্ষতা শিকিব লাগিব।

এটা সমীক্ষাত দেখা গৈছে যে বহু শিক্ষক পাঠ পৰিকল্পনা বা শিক্ষাদানৰ বাবে এআই ব্যৱহাৰ কৰিলেও, এআইৰ মৌলিক ধাৰণাসমূহ সম্পূৰ্ণৰূপে বুজি পোৱা শিক্ষকৰ সংখ্যা



এফালে মহানগৰৰ উন্নত ব্যক্তিগত বিদ্যালয়ত পঢ়া শিক্ষাৰ্থীয়ে এআইৰ সহায়ত নতুন নতুন উদ্ভাৱন কৰি আছে। আনফালে, বহু চৰকাৰী বিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে এতিয়াও এআই কেনেকৈ ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে সেয়াও ভালদৰে নাজানে।

এতিয়াও সীমিত।

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, শিক্ষকৰ দক্ষতা উন্নয়ন অবিহনে এআই শিক্ষা সফল হ'ব নোৱাৰে।

ভাষা-আটাইতকৈ ডাঙৰ বাধা

বৰ্তমান অধিকাংশ এআই প্লেটফৰ্ম ইংৰাজী-কেন্দ্ৰিক।

কিন্তু ভাৰতৰ অধিকাংশ শিক্ষাৰ্থীয়ে মাতৃভাষা বা আঞ্চলিক ভাষাত শিক্ষা গ্ৰহণ কৰে। অসমীয়া, হিন্দী, বাংলা, তামিল, মাৰাঠী, বড়ো আদি ভাষাত মানসম্পন্ন এআই শিক্ষাৰ

সামগ্ৰী এতিয়াও সীমিত।

ইয়াৰ ফলত বহু শিক্ষাৰ্থী এআই শিক্ষাৰ পৰা পিছ পৰি যাব পাৰে।

ভাৰতীয় বাস্তৱতাৰ সৈতে খাপ খোৱা এআইৰ প্ৰয়োজন

বিশেষজ্ঞসকলে কয়, কেৱল বিদেশী এআই ব্যৱহাৰ কৰিলেই যথেষ্ট নহয়।

ভাৰতীয় ইতিহাস, সংস্কৃতি, ভাষা, সমাজ আৰু পাঠ্যক্ৰমৰ সৈতে খাপ খোৱা স্বদেশী এআই মডেল গঢ়ি তোলাটো অত্যন্ত প্ৰয়োজনীয়।

ইয়াৰ জৰিয়তে শিক্ষাৰ্থীয়ে নিজৰ বাস্তৱ জীৱনৰ উদাহৰণেৰে শিক্ষা লাভ কৰিব পাৰিব।

চৰকাৰৰ লক্ষ্য আৰু বাস্তৱতা

ৰাষ্ট্ৰীয় শিক্ষা নীতি -এ বিদ্যালয় পৰ্যায়ত এআই শিক্ষাৰ ওপৰত গুৰুত্ব আৰোপ কৰিছে।

ইয়াৰ অংশ হিচাপে তৃতীয় শ্ৰেণীৰ পৰা অষ্টম শ্ৰেণীলৈ AI আৰু Computational Thinking পাঠ্যক্ৰম প্ৰস্তুত কৰা হৈছে।

কিন্তু বিশেষজ্ঞসকলে সতৰ্ক কৰি কৈছে যে- উন্নত কম্পিউটাৰ লেব, নিৰ্ভৰযোগ্য ইণ্টাৰনেট, প্ৰশিক্ষিত শিক্ষক, মাতৃভাষাভিত্তিক শিক্ষাসামগ্ৰী-

এই সকলোবোৰ একেলগে নিশ্চিত নকৰিলে লক্ষ্য পূৰণ কঠিন হ'ব।

অসম আৰু উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ

ক্ষেত্ৰতো একে প্ৰত্যাহ্বান

অসমসহ উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ বহু বিদ্যালয়ত এতিয়াও ডিজিটেল আন্তঃগাঁথনি সীমিত।

দূৰৱৰ্তী পাহাৰীয়া অঞ্চল, ইণ্টাৰনেট সংযোগৰ সমস্যা, বিদ্যুতৰ অনিয়মীয়া যোগান আৰু প্ৰযুক্তিগত সুবিধাৰ অভাৱে এআই শিক্ষাৰ বিস্তাৰত বাধা সৃষ্টি কৰিছে।

বিশেষজ্ঞসকলে কয়, যদি এই অঞ্চলসমূহত বিশেষ বিনিয়োগ নকৰা হয়, তেন্তে ডিজিটেল বৈষম্য আৰু অধিক বৃদ্ধি পাব।

ভৱিষ্যতৰ পথ

এআই যুগত সফল হ'বলৈ ভাৰতক কেৱল উন্নত প্ৰযুক্তি গঢ়ি তুলিলেই নহ'ব।

সমান গুৰুত্ব দিব লাগিব-

বিদ্যালয়সমূহৰ ডিজিটেল উন্নয়নত, শিক্ষক প্ৰশিক্ষণত, আঞ্চলিক ভাষাভিত্তিক এআই বিকাশত, আৰু সকলো শিশুৰ বাবে সমান সুযোগ সৃষ্টিত।

এআইয়ে বিশ্বৰ শিক্ষা ব্যৱস্থাক নতুন দিশ দিছে। কিন্তু ভাৰতৰ বাবে প্ৰকৃত সফলতা তেতিয়াহে আহিব, যেতিয়া মহানগৰৰ মেধাৱী শিক্ষাৰ্থীৰ লগতে গ্ৰামাঞ্চলৰ প্ৰতিজন শিশুৰেও সমানভাৱে এই নতুন যুগৰ সুযোগ লাভ কৰিব।

এআই ভৱিষ্যতৰ প্ৰযুক্তি নহয়-ই বৰ্তমানৰ বাস্তৱতা। এতিয়া প্ৰশ্নটো হ'ল, এই বাস্তৱতাৰ বাবে ভাৰতৰ বিদ্যালয়সমূহ কিমান সাজু?



# কুডানকুলম পাৰমাণৱিক শক্তি প্ৰকল্পৰ গোপন নথি ফাদিলৰ দাবী

জন জন বিচাৰ

...শু শুৱাহাটী

আজিৰ বিশ্বত যুদ্ধ কেৱল সীমান্তত অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰেৰে নহয়, তথ্য-প্ৰযুক্তিৰ জগততো চলি আছে। এখন দেশৰ বিদ্যুৎ, বেংকিং, যোগাযোগ, পাৰমাণৱিক শক্তি আৰু সামৰিক ব্যৱস্থালৈ কম্পিউটাৰৰ জৰিয়তে চলা আক্ৰমণ এতিয়া এক ডাঙৰ প্ৰত্যাহ্বান। এনে সময়তে তামিলনাডুৰ কুডানকুলম পাৰমাণৱিক শক্তি প্ৰকল্পৰ সৈতে জড়িত গোপন নথি ফাদিল হোৱা বুলি উত্থাপিত দাবীয়ে সমগ্ৰ দেশত উদ্বেগৰ সৃষ্টি কৰিছে।

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, যদি গুৰুত্বপূৰ্ণ আন্তঃগাঁথনিৰ সৈতে জড়িত তথ্য অসৎ শক্তিৰ হাতত পৰে, তেন্তে সেয়া কেৱল তথ্য চুৰিৰ ঘটনা নহয়-ই ৰাষ্ট্ৰীয় সুৰক্ষাৰ বাবেও এক গুৰুতৰ সংকেত।

কি দাবী কৰা হৈছে?

বৰল্ড লিকছনামৰ এক মুক্তিপণ-ভিত্তিক কম্পিউটাৰ আক্ৰমণকাৰী গোটে দাবী কৰিছে যে কুডানকুলম পাৰমাণৱিক শক্তি প্ৰকল্পৰ সৈতে সম্পৰ্কিত ১৯ হাজাৰতকৈ অধিক সংবেদনশীল নথি গোপন অনলাইন জগতত ডাৰ্ক ৱেব প্ৰকাশ কৰা হৈছে।

দাবী অনুসৰি, এই নথিসমূহ প্ৰকল্পটোৰ সৈতে জড়িত এটা ঠিকাদাৰী প্ৰতিষ্ঠানৰ তথ্য-ভাণ্ডাৰৰ পৰা সংগৃহীত বৃহৎ পৰিমাণৰ নথিৰ অংশ।

অৱশ্যে এই দাবীৰ সত্যতা এতিয়ালৈকে কোনো স্বতন্ত্ৰ সংস্থাই নিশ্চিত কৰা নাই।

তথ্য কেনেদৰে ফাদিল হল?

উপলব্ধ তথ্য অনুসৰি, তৃতীয় পক্ষৰ তথ্য সংৰক্ষণ কেন্দ্ৰৰ ছাৰ্ভাৰত অনধিকৃতভাৱে প্ৰৱেশ কৰাৰ ঘটনা ধৰা পৰিছিল।

ডিজিটেল ভাৰতৰ সুৰক্ষা কিমান নিৰাপদ?  
ৰাষ্ট্ৰীয় নিৰাপত্তাৰ ক্ষেত্ৰত নতুন সতৰ্কবাণী



সংশ্লিষ্ট পক্ষই জনোৱা অনুসৰি-সন্দেহজনক কম্পিউটাৰ কাৰ্যকলাপ সময়মতে চিনাক্ত কৰা হৈছিল। ক্ষতিকাৰক কম্পিউটাৰ কাৰ্যসূচী সম্পূৰ্ণৰূপে সক্ৰিয় হোৱাৰ আগতেই প্ৰতিৰোধমূলক ব্যৱস্থা লোৱা হৈছিল।

সম্ভাৱ্য তথ্য ফাদিলৰ বিষয়ে চৰকাৰক অৱগত কৰা হৈছে।

তথাপিও কোনবোৰ তথ্য প্ৰকৃততে ক্ষতিগ্ৰস্ত হৈছে, সেই বিষয়ে এতিয়াও স্পষ্ট তথ্য প্ৰকাশ কৰা হোৱা নাই।

কোন ধৰণৰ নথি জড়িত?

প্ৰকাশিত দাবী অনুসৰি, ২০১৬ চনৰ পৰা ২০২৫ চনলৈকে বিভিন্ন সময়ৰ বহু কাৰিকৰী আৰু প্ৰশাসনিক নথি ইয়াত অন্তৰ্ভুক্ত।

তাৰ ভিতৰত আছে-

বায়ু চলাচল আৰু শীতলীকৰণ ব্যৱস্থাৰ নক্সা, নিয়ন্ত্ৰণ কক্ষৰ বিন্যাস, সঁজুলিৰ পৰিদৰ্শন

প্ৰতিবেদন, যোগানকাৰী প্ৰতিষ্ঠানৰ তালিকা, ঠিকাদাৰী প্ৰস্তাৱ, বৈঠকৰ কাৰ্যবিৱৰণী, বীমা সম্পৰ্কীয় নথি।

এই নথিসমূহ মূলতঃ কুডানকুলম প্ৰকল্পৰ তৃতীয় আৰু চতুৰ্থ এককৰ সৈতে সম্পৰ্কিত বুলি দাবী কৰা হৈছে।

আনহাতে, পাৰমাণৱিক চুল্লীৰ মূল নক্সা বা মুখ্য নিয়ন্ত্ৰণ ব্যৱস্থাৰ তথ্য ফাদিল হোৱা বুলি বৰ্তমানলৈকে কোনো নিশ্চিত প্ৰমাণ পোৱা হোৱা নাই।

তদন্ত অব্যাহত

ঘটনাটোৰ তদন্ত চলাই আছে- ভাৰতীয় কম্পিউটাৰ জৰুৰী সঁহাৰি দান দল আৰু ভাৰতীয় পাৰমাণৱিক শক্তি নিগম।

তদন্তকাৰী সংস্থাৰ সন্মুখত এতিয়ালৈকে স্পষ্টকৈ কৈছে যে পাৰমাণৱিক চুল্লীৰ পৰিচালনা ব্যৱস্থা বা সুৰক্ষা ব্যৱস্থাত প্ৰত্যক্ষ

ক্ষতি হোৱাৰ কোনো প্ৰমাণ পোৱা হোৱা নাই।

কিয় উদ্বেগৰ বিষয়?

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, মূল পাৰমাণৱিক ব্যৱস্থা অক্ষত থাকিলেও সহায়ক আন্তঃগাঁথনি, যোগান ব্যৱস্থা, ঠিকাদাৰী সংস্থা অথবা তথ্য-প্ৰযুক্তি ব্যৱস্থাৰ তথ্য যদি অসৎ শক্তিৰ হাতত পৰে, তেন্তে- লক্ষ্যভিত্তিক কম্পিউটাৰ আক্ৰমণ, যোগান ব্যৱস্থাৰ বিঘিনি, বিদ্যুৎ উৎপাদনত ব্যাঘাত, গুপ্তচৰবৃত্তি, অথবা ৰাষ্ট্ৰীয় নিৰাপত্তাৰ ওপৰত পৰোক্ষ চাপ সৃষ্টি হ'ব পাৰে।

এই কাৰণেই উন্নত দেশসমূহে এতিয়া চাইবাৰ সুৰক্ষাক সামৰিক সুৰক্ষাৰ সমান গুৰুত্ব দিবলৈ আৰম্ভ কৰিছে।

ডিজিটেল ভাৰতৰ বাবে কি শিক্ষা?

ভাৰত দ্ৰুতগতিত ডিজিটেল শাসন, কৃত্ৰিম বুদ্ধিমত্তা, অনলাইন সেৱা আৰু আধুনিক শক্তি ব্যৱস্থাৰ দিশে আগবাঢ়িছে। কিন্তু এই ঘটনাই দেখুৱাইছে যে কেৱল মূল প্ৰতিষ্ঠান সুৰক্ষিত হ'লেই যথেষ্ট নহয়।

একেই সুৰক্ষা নিশ্চিত কৰিব লাগিব- ঠিকাদাৰী প্ৰতিষ্ঠান, তথ্য সংৰক্ষণ কেন্দ্ৰ, যোগান শৃংখল, বাহ্যিক তথ্য-প্ৰযুক্তি ব্যৱস্থা, আৰু সকলো সহযোগী প্ৰতিষ্ঠানত।

সময়ৰ দাবী-অধিক শক্তিশালী তথ্য সুৰক্ষা

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, ৰাষ্ট্ৰীয় গুৰুত্বপূৰ্ণ প্ৰতিষ্ঠানসমূহৰ বাবে এতিয়া অত্যাৱশ্যক- বহুপৰ্যায়ৰ তথ্য সুৰক্ষা, নিয়মীয়া নিৰাপত্তা পৰীক্ষা, যোগান শৃংখলৰ কঠোৰ পৰীক্ষণ, তাৎক্ষণিক সতৰ্কীকৰণ ব্যৱস্থা, আৰু সংবেদনশীল নথিৰ কঠোৰ সুৰক্ষা ব্যৱস্থা।

কুডানকুলমৰ ঘটনাই পুনৰ সোঁৱৰাই দিলে যে ডিজিটেল যুগত তথ্য সুৰক্ষা কেৱল প্ৰযুক্তিৰ বিষয় নহয়; ই শক্তি নিৰাপত্তা, অৰ্থনৈতিক স্থিৰতা আৰু ৰাষ্ট্ৰীয় সাৰ্বভৌমত্বৰ সৈতে ওতঃপ্ৰোতভাৱে জড়িত।

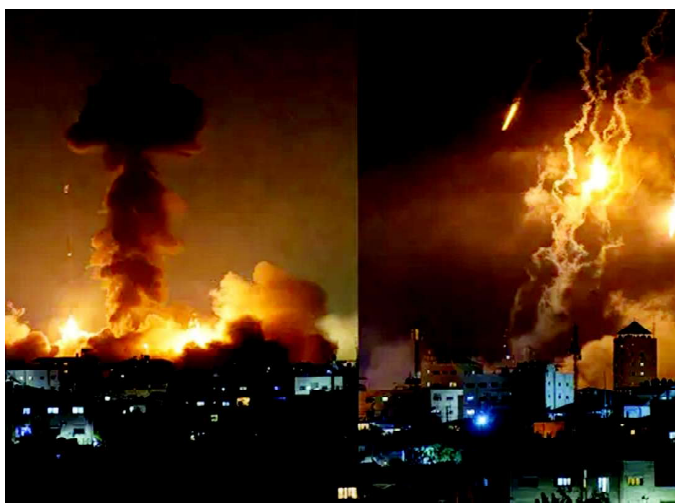
## মধ্যপ্ৰাচ্যত যুদ্ধৰ উত্তাপ বৃদ্ধি, ইৰাণত আমেৰিকাৰ আক্ৰমণ অব্যাহত

জন জন বিচাৰ

...শু তেহৰান

মধ্যপ্ৰাচ্যত চলি থকা আমেৰিকা-ইৰাণ সংঘাত ক্ৰমেই অধিক ভয়ংকৰ ৰূপ ধাৰণ কৰিছে। একেৰাহে পঞ্চম দিন ধৰি আমেৰিকাই ইৰাণৰ সামৰিক লক্ষ্যস্থানসমূহত ক্ষেপণাস্ত্ৰ আৰু আকাশপথৰ আক্ৰমণ অব্যাহত ৰাখিছে। এই আক্ৰমণৰ ফলত হৰ্মুজ জলডমৰুমধ্যক কেন্দ্ৰ কৰি নতুনকৈ উদ্বেজনা বৃদ্ধি পোৱাৰ লগতে সমগ্ৰ বিশ্বত তেল যোগান, সামুদ্ৰিক বাণিজ্য আৰু আঞ্চলিক নিৰাপত্তাক লৈ উদ্বেগ তীব্ৰ হৈ উঠিছে।

আমেৰিকাৰ কেন্দ্ৰীয় সামৰিক কমান্ডৰ 'চেণ্টকম' তথ্য অনুসৰি, হৰ্মুজ জলডমৰুমধ্যত ইৰাণৰ বন্দৰসমূহৰ দিশে অগ্ৰসৰ হোৱা এখন খালী তেলবাহী জাহাজত লক্ষ্য কৰি হেলফায়াৰ ক্ষেপণাস্ত্ৰ নিক্ষেপ কৰা



হয়। আক্ৰমণত জাহাজখন সম্পূৰ্ণ ধ্বংস নহ'লেও চলাচলৰ অযোগ্য হৈ পৰে আৰু আগবাঢ়িব নোৱাৰে।

বন্দৰ আক্ৰমণ, আহৰাজ আৰু চাবাহাৰত বিস্ফোৰণ

নতুন আক্ৰমণৰ পাছতেই ইৰাণৰ দক্ষিণাঞ্চলৰ কৌশলগত গুৰুত্বপূৰ্ণ বন্দৰ আক্ৰমণ, আহৰাজ আৰু

চাবাহাৰ চহৰত একাধিক বিস্ফোৰণৰ খবৰ পোৱা গৈছে। এই অঞ্চলসমূহ ইৰাণৰ সামৰিক আৰু বাণিজ্যিক দিশৰ পৰা অত্যন্ত স্পৰ্শকাতৰ হিচাপে পৰিচিত।

ইৰাণৰ চৰকাৰী সংবাদমাধ্যমৰ মতে, আহৰাজস্থিত শ্বহীদ বাঘায়ী চিকিৎসালয়ৰ ওচৰত এটা ক্ষেপণাস্ত্ৰ

পতিত হোৱাৰ ফলত চিকিৎসাধীন শিশু ৰোগী আৰু তেওঁলোকৰ পৰিয়ালক সুৰক্ষাৰ স্বার্থত অস্থায়ীভাৱে স্থানান্তৰ কৰা হয়। চিকিৎসালয় আৰু ওচৰৰ আবাসিক অঞ্চলৰ বহু ঘৰ-দুৱাৰৰ ক্ষতি হোৱা বুলি জানিব পৰা গৈছে যদিও হতাহতৰ সঠিক সংখ্যা এতিয়াও প্ৰকাশ কৰা হোৱা নাই।

হৰ্মুজ জলডমৰুমধ্যক

কেন্দ্ৰ কৰি সংঘাত

বিশ্বৰ প্ৰায় এক-পঞ্চমাংশ খাৰুৱা তেল এই হৰ্মুজ জলডমৰুমধ্যৰে পৰিবহণ হয়। ফলত এই অঞ্চলত সামান্য উদ্বেজনাও আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় বজাৰত তেলৰ মূল্য, সামুদ্ৰিক বাণিজ্য আৰু বিশ্ব অৰ্থনীতিত প্ৰভাৱ পেলাব পাৰে।

আমেৰিকাই দাবী কৰিছে যে বাণিজ্যিক জাহাজসমূহৰ নিৰাপত্তা নিশ্চিত কৰাৰ বাবেই ইৰাণৰ সামৰিক অৱস্থানসমূহ লক্ষ্য কৰি

অভিযান চলোৱা হৈছে। আনহাতে, ইৰাণে এই আক্ৰমণক নিজৰ সাৰ্বভৌমত্বৰ ওপৰত প্ৰত্যক্ষ আঘাত বুলি অভিহিত কৰিছে।

পূৰ্বৰ নৌ-অভিযানৰ তথ্য

চেণ্টকমৰ তথ্য অনুসৰি, ১৩ এপ্ৰিলৰ পৰা ১৮ জুনলৈ চলা পূৰ্বৰ নৌ-অভিযানত ইৰাণৰ সৈতে জড়িত নটা জাহাজ অচল কৰি দিয়া হৈছিল আৰু ১৪০ৰো অধিক বাণিজ্যিক জাহাজৰ পথ পৰিৱৰ্তন কৰিবলৈ বাধ্য হৈছিল।

বিশ্বৰ দৃষ্টি মধ্যপ্ৰাচ্যলৈ

বিশ্লেষকসকলৰ মতে, যদি এই সংঘাত আৰু অধিক বিস্তাৰ লাভ কৰে, তেন্তে কেৱল মধ্যপ্ৰাচ্যই নহয়, সমগ্ৰ বিশ্বই শক্তি সংকট, বাণিজ্যিক অস্থিৰতা আৰু নতুন কূটনৈতিক সংঘাতৰ সন্মুখীন হ'ব পাৰে। ৰাষ্ট্ৰসংঘকে ধৰি একাধিক দেশ ইতিমধ্যে সংযম আৰু আলোচনা মাধ্যমেৰে সমস্যাৰ সমাধানৰ আহ্বান জনাইছে।



# চিৰবিদায় পুৰবী শৰ্মা : নিভি গল অসমীয়া ৰূপালী পৰ্দাৰ এক চিৰসেউজ দীপশিখা

জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

কিছুমান শিল্পী থাকে, যিসকলে কেৱল অভিনয় নকৰে-তেওঁলোকে এটা সময়ক প্ৰতিনিধিত্ব কৰে। তেওঁলোকৰ হাঁহি, কণ্ঠ, দৃষ্টি আৰু অভিনয় দৰ্শকৰ মনত যুগ যুগ ধৰি সজীৱ হৈ থাকে। তেনে এগৰাকী শিল্পী আছিল পুৰবী শৰ্মা। ১৪ জুলাইৰ সন্ধিয়া তেওঁৰ আকস্মিক প্ৰয়াণৰ খবৰে সমগ্ৰ অসমীয়া চলচ্চিত্ৰ জগতৰ লগতে অসংখ্য অনুৰাগীক গভীৰ শোকত নিমজ্জিত কৰিলে।

মঙলবাৰে সন্ধিয়া প্ৰায় ৭:৩০ বজাত হৃদৰোগত আক্ৰান্ত হোৱাৰ পিছত পুৰবী শৰ্মাক ততাতৈয়াকৈ গুৱাহাটীৰ এখন চিকিৎসালয়লৈ নিয়া হয়। কিন্তু চিকিৎসকে তেওঁক মৃত ঘোষণা কৰে। তেওঁৰ নশ্বৰ দেহ গুৱাহাটীৰ শান্তিপুৰস্থিত বাসগৃহলৈ অনা হৈছে, যত আত্মীয়-স্বজন, সহ শিল্পী, বন্ধু-বান্ধৱ আৰু অনুৰাগীসকলে শেষ শ্ৰদ্ধাঞ্জলি জ্ঞাপন কৰিছে।

এগৰাকী অভিনেত্ৰীৰ পৰা এটা যুগৰ প্ৰতীকলৈ

পুৰবী শৰ্মা কেৱল এগৰাকী সফল অভিনেত্ৰী নাছিল; তেওঁ অসমীয়া চলচ্চিত্ৰৰ এক পৰিচিত মুখ, যিয়ে দশকজুৰি নিজৰ স্বাভাৱিক অভিনয়, সংযমী ব্যক্তিত্ব আৰু শিল্পৰ



এগৰাকী শিল্পীৰ জীৱন শেষ হব পাৰে, কিন্তু তেওঁৰ সৃষ্টি কেতিয়াও শেষ নহয়। পুৰবী শৰ্মা তেনে এগৰাকী শিল্পী, যাৰ অভিনয়ৰ দীপ্তি অসমীয়া সংস্কৃতিৰ আকাশত সদায় জিলিকি থাকিব।

জন জন বিচাৰ পৰিয়ালৰ ফালৰ পৰা প্ৰয়াত অভিনেত্ৰী পুৰবী শৰ্মালৈ আন্তৰিক শ্ৰদ্ধাঞ্জলি। শোকসন্তপ্ত পৰিয়ালবৰ্গলৈ গভীৰ সমবেদনা জ্ঞাপন কৰা হল।

দেশজুৰি নতুন পৰিচয় দিছিল। সেই সফলতাৰ সৈতে পুৰবী শৰ্মাৰ নামো অসমৰ আগশাৰীৰ অভিনেত্ৰীসকলৰ মাজত স্থায়ীভাৱে স্থান লাভ কৰে।



প্ৰতি গভীৰ নিষ্ঠাৰে বিশেষ স্থান দখল কৰিছিল।

তেওঁৰ অভিনয় জীৱনৰ আৰম্ভণি হৈছিল 'আজলি নাবৌ' ছবিৰ জৰিয়তে। ইয়াৰ পিছত 'বাগিনী' চলচ্চিত্ৰই তেওঁৰ শিল্পী জীৱনলৈ এক নতুন দিশ উন্মোচন কৰে। এই ছবিখনে ৰাষ্ট্ৰীয় চলচ্চিত্ৰ বঁটা লাভ কৰি অসমীয়া চলচ্চিত্ৰক

চলচ্চিত্ৰ, ধাৰাবাহিক আৰু সংগীত ভিডিওসকলোতে সমান উজ্জল

সময়ৰ লগে লগে তেওঁ নিজকে বিভিন্ন ধৰণৰ চৰিত্ৰত সফলভাৱে উপস্থাপন কৰিছিল। 'Gateway' (2006) ধাৰাবাহিকত তেওঁৰ অভিনয় দৰ্শকৰ বিশেষ সমাদৰ লাভ কৰিছিল। আনহাতে, 'পৰভাত' ২০২২ চলচ্চিত্ৰত তেওঁৰ সংযত

অথচ শক্তিশালী অভিনয়ে পুনৰ প্ৰমাণ কৰিছিল যে প্ৰকৃত শিল্পীৰ কোনো বয়স নাথাকে।

কেৱল চলচ্চিত্ৰতেই নহয়, জনপ্ৰিয় কণ্ঠশিল্পী জুবিন গাৰ্গৰ সৈতে জোৰা বহুৰে সংগীত ভিডিঅত অভিনয় কৰি তেওঁ নতুন প্ৰজন্মৰ দৰ্শকৰ মনতো বিশেষ স্থান দখল কৰিছিল।

সহশিল্পীৰ প্ৰতি সন্মান

সংস্কৃতিৰ প্ৰতি অঙ্গীকাৰ

পুৰবী শৰ্মাই বিশিষ্ট অভিনেতা কুলদা কুমাৰ ভট্টাচাৰ্যকে ধৰি অসমীয়া চলচ্চিত্ৰৰ বহু কিংবদন্তি শিল্পীৰ সৈতে কাম কৰিছিল। শিল্পী হিচাপে তেওঁৰ সৌজন্য, বিনয় আৰু কৰ্মনিষ্ঠাৰ বাবে তেওঁ সকলোৰে প্ৰিয় আছিল।

Filmfare Awards Assamese আৰু Prag Cine Awardsৰ দৰে বিভিন্ন সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানত তেওঁৰ উপস্থিতিয়ে সদায় অসমীয়া চলচ্চিত্ৰৰ প্ৰতি তেওঁৰ অটুট ভালপোৱা আৰু দায়বদ্ধতাৰ পৰিচয় দিছিল।

ব্যক্তিগত জীৱনতো আছিল এক অনুকৰণীয় যাত্ৰা

ব্যক্তিগত জীৱনত পুৰবী শৰ্মা আছিল বিশিষ্ট অভিনেতা, লেখক আৰু পৰিচালক তপন দাসৰ জীৱনসংগিনী। শিল্প আৰু জীৱন-দুয়োটা ক্ষেত্ৰতে তেওঁলোকৰ পাৰস্পৰিক সহযোগিতা আৰু সৃষ্টিশীল সম্পৰ্ক অসমীয়া সাংস্কৃতিক জগতত বিশেষভাৱে সমাদৃত হৈছিল।

এগৰাকী শিল্পীৰ প্ৰয়াণ

কিন্তু শিল্পৰ মৃত্যু নহয়

শিল্পীৰ দেহাৱসান ঘটে, কিন্তু তেওঁৰ সৃষ্টি অমৰ হৈ থাকে। পুৰবী শৰ্মাৰ অভিনীত অসংখ্য চৰিত্ৰ, সংলাপ আৰু পৰ্দাত এৰি যোৱা অনুভূতিবোৰ আগন্তুক সময়তো অসমীয়া দৰ্শকৰ হৃদয়ত জীয়াই থাকিব। তেওঁৰ প্ৰয়াণে অসমীয়া চলচ্চিত্ৰই হেৰুৱালে এক সংযমী, সৃষ্টিশীল আৰু নিবেদিতপ্ৰাণ শিল্পীক। কিন্তু তেওঁ এৰি যোৱা শিল্পৰ ভঁৰাল, স্মৃতি আৰু অনুপ্ৰেৰণা কেতিয়াও স্তান নহব।

অসমীয়া ৰূপালী পৰ্দাৰ এই উজ্জ্বল নক্ষত্ৰগৰাকী হয়তো আজিৰ পৰা আমাৰ মাজত নাই, কিন্তু তেওঁৰ অভিনয়, ব্যক্তিত্ব আৰু শিল্পৰ প্ৰতি থকা নিষ্ঠা সদায় স্মৰণীয় হৈ থাকিব।

## GAURANSHI INDUSTRIES

Purity in Every Drop, Nature in Every Product.

**100% NATURAL**

- NO ADDITIVES
- BOOSTS IMMUNITY
- RICH IN ANTIOXIDANTS
- ECO FRIENDLY

| TEA  |                             |               |
|------|-----------------------------|---------------|
| NAME | MAKHANA (FOX NUT SUPERFOOD) | ASSAM CTC TEA |
| SIZE | 200gm                       | 100gm         |

**HONEY**

| MORINGA HONEY |               | TULSI HONEY |             |
|---------------|---------------|-------------|-------------|
| NAME          | MORINGA HONEY | NAME        | TULSI HONEY |
| SIZE          | 200gm         | SIZE        | 200gm       |

| MUSTARD HONEY |               | LITCHI HONEY |              | WILD FOREST HONEY |                   |
|---------------|---------------|--------------|--------------|-------------------|-------------------|
| NAME          | MUSTARD HONEY | NAME         | LITCHI HONEY | NAME              | WILD FOREST HONEY |
| SIZE          | 200gm         | SIZE         | 200gm        | SIZE              | 200gm             |

RAW & UNPROCESSED

PURE & NATURAL

DIRECTLY FROM OUR FARMS

TRUSTED BY THOUSANDS

3rd Floor, IIT Road, Jayguru, Amingaon, Kamrup, Assam - 781031, India

Contact : +91-88224 20619

E-Mail : gauranshiind@gmail.com

www.gauranshiindustries.com





# DBT Drives Sharp Drop in Assam Poverty

Jan Jan Vichar  
...Guwahati

Assam has witnessed a significant decline in multi-dimensional poverty over the past decade, with the rate falling from 32.67 per cent in 2015 to 14.47 per cent, Chief Minister Himanta Biswa Sarma told the Assam Assembly, attributing the achievement largely to the state's Direct Benefit Transfer (DBT) programmes.

Replying to the discussion on the state budget, the Chief Minister said direct cash transfers have emerged as the most effective instrument for poverty alleviation, enabling financial assistance to reach beneficiaries directly and transparently. He asserted that the government's next objective is to reduce Assam's multidimensional poverty rate to single digits.

Sarma stated that while economic growth through agriculture, industries and



MSMEs remains essential, such measures require time to generate results. In contrast, DBT schemes provide immediate financial support to vulnerable families and have had a measurable impact on improving living standards.

Highlighting key welfare initiatives, the Chief Minister said flagship schemes such as Orunodoi, Nijut Moina, and the free foodgrain distribution

programme have played a decisive role in reducing poverty across the state. He also credited Aadhaar-linked bank accounts and digital governance for ensuring that government benefits reach intended recipients without leakages.

The Chief Minister further said that strong support from the Central Government has enabled Assam to undertake transformative

## Assam Must Embrace Development or Risk Falling Behind: CM

Jan Jan Vichar  
...Guwahati

Chief Minister Himanta Biswa Sarma cautioned that Assam could lose its competitive edge in the Northeast if major infrastructure and industrial projects continue to face prolonged resistance, stressing that the state must create a development-friendly environment to attract investment, generate employment and sustain long-term economic growth.

Replying to the discussion on the Assam Budget 2026-27 in the State Assembly, Sarma said Assam must actively participate in the era of 'competitive federalism' by accelerat-

ing projects in power generation, industry, semi-conductors, artificial intelligence and higher education.

Drawing a comparison with neighbouring Arunachal Pradesh, the Chief Minister said the state has secured strong public support for large hydropower projects and is moving towards generating nearly 30,000 MW of electricity, with around 10,000 MW already under development. He warned that if these projects are completed as planned, Arunachal Pradesh could emerge as the most economically advanced state in the Northeast.

Sarma observed that

Continued on page 16

## Assam to Boost Farm Infrastructure

Jan Jan Vichar  
...Guwahati

In a major push to strengthen agricultural infrastructure and improve farmers' access to institutional finance, Assam Agriculture Minister Pijush Hazarika appealed to all Members of the Legislative Assembly (MLAs) to mobilise progressive farmers, agri-entrepreneurs and eligible beneficiaries for the Agricultural Infrastructure Fund (AIF) Awareness Programme scheduled for July 25 at the Jyoti Bishnu Auditorium in Guwahati.

Addressing the Assam Assembly during the Budget Session, Hazarika said the programme will be attended by Chief Minister Himanta Biswa Sarma and is expected to bring together nearly 5,000 agri-entrepreneurs from across the state. The Minister described the Agricultural Infrastructure Fund (AIF) as a flagship initiative of the Government of



India aimed at creating modern post-harvest infrastructure, improving storage facilities and strengthening the agricultural value chain.

Under the scheme, eligible farmers, Farmer Producer Organisations (FPOs), cooperatives, agri-startups and other stakeholders can avail loans of up to Rs. 2 crore with a 3 per cent interest subvention for developing agricultural infrastructure. Applications are processed through the AIF online portal, and eligible beneficiaries receive institutional finance after bank approval.

Hazarika informed the House

- 5,000 Agri-Entrepreneurs to Join AIF Awareness Programme
- Pijush Hazarika urges MLAs to mobilise farmers for July 25 event
- Himanta Biswa Sarma to attend

that several beneficiaries in Assam have already established agricultural infrastructure under the scheme. However, he noted that many eligible farmers and agri-entrepreneurs are still unaware of the opportunities available through the fund.

The July 25 awareness programme aims to educate prospective beneficiaries about the scheme, simplify the application process and encourage greater participation in infrastructure development projects that can improve farm productivity, storage capacity and market access. Seeking coopera-

tion from legislators across party lines, the Agriculture Minister urged MLAs to ensure maximum participation from their constituencies and encourage farmers and rural entrepreneurs to take full advantage of the centrally sponsored initiative.

The initiative is expected to accelerate agricultural modernisation in Assam by promoting investment in warehouses, cold storage facilities, processing units and other critical rural infrastructure, strengthening the state's farm economy and creating new opportunities for agricultural entrepreneurship.



# Floods and Landslides Leave Mizoram and Arunachal Battling Nature's Fury

Jan Jan Vichar

...Guwahati

The relentless monsoon has unleashed widespread devastation across North-east India, with Mizoram and Arunachal Pradesh bearing the brunt of incessant rainfall. Floods, landslides, washed-away bridges and blocked highways have disrupted daily life, forced evacuations and left thousands stranded, highlighting the region's growing vulnerability to extreme weather events.

## Postpone Your Visit Mizoram Appeals to Tourists

The Mizoram government has issued a rare advisory urging tourists to defer their travel plans until weather conditions improve. Days of continuous rainfall have triggered landslides, overflowing rivers and severe damage to infrastructure across the state.

In southern Mizoram's Lunglei district, nearly 100 families have been evacuated after the Khawthlangtuipui River overflowed, inundating residential areas in and around Tlabung near the Bangladesh border.



## Monsoon on the Edge

Travel has also been severely disrupted after a massive landslide blocked National Highway-54, leaving around 200 travelers stranded between Lawngtlai and Siaha districts. Although authorities have deployed heavy machinery to clear the debris, fresh landslides caused by continuous rain have repeatedly halted restoration work.

Another major landslide at Ngaizel, near Aizawl, continues to block the important Aizawl-Thenzawl-Lunglei Highway, while swollen rivers have submerged agricultural fields in Serchhip district.

The India Meteorological Department (IMD) has reported continued rainfall across the state, with

Serchhip recording the highest rainfall of 34 mm in the latest 24-hour period.

## Arunachal Flood Crisis Deepens

Neighbouring Arunachal Pradesh is facing one of its worst flood situations in recent years.

According to the State Emergency Operation Centre (SEOC), 97,182 people across 425 villages in all 26 districts have been affected by floods and landslides. The disaster has already claimed seven lives, injured 29 people, and left two schoolboys missing in Tirap district, where rescue teams continue their search.

**The scale of infrastructure damage is enormous:** 150 roads damaged, 19 bridges washed away, 21 culverts

destroyed, 221 water supply systems affected, 58 government buildings damaged, 156 power lines and 224 electric poles disrupted, 10 hydel projects impacted, Two hospitals and three schools damaged. Large stretches of farmland and forest have also suffered extensive losses, affecting livelihoods across the state.

## Road Connectivity Severely Hit

In Kurung Kumey district, flash floods washed away bridges connecting villages and damaged public buildings, churches and homes. A massive landslide has blocked National Highway-13 in Pakke Kessang district, while a washed-out road near the Sela Tunnel has forced authorities to

divert traffic through the old Sela route. The Potin-Kimin road in Papum Pare district also remains inaccessible following another landslide.

## Climate Warning for the Northeast

Experts say the recurring pattern of intense rainfall, flash floods and landslides reflects the increasing impact of climate variability across the Himalayan and northeastern region. Fragile hill slopes, rapid urbanisation, deforestation and extreme rainfall events are making disasters more frequent and more destructive. The situation also underscores the urgent need for stronger disaster-resilient infrastructure, better early warning systems and climate-adaptive planning in one of India's most ecologically sensitive regions.

## Continued from page 15

### DBT Drives Sharp Drop in...

infrastructure projects, including the Kaziranga Elevated Corridor and the proposed underwater tunnel beneath the Brahmaputra River. He described the state budget as a reflection of the Centre and Assam government's shared commitment to long-term development.

Calling for accelerated industrialisation and economic expansion, Sarma warned that resistance to major infrastructure projects could slow Assam's growth momentum. He urged public representatives to encourage entrepreneurship, support development initiatives in their constituencies, and guide young people towards education, skill development and competitive examinations.

Defending the state budget against Opposition criticism, the Chief Minister maintained

that it represents a continuation of the government's long-term vision of building a self-reliant, economically stronger and poverty-free Assam.

The government believes that sustained welfare support, combined with infrastructure development and employment generation, will help Assam achieve faster economic growth while lifting more families out of poverty.

### DBT Drives Sharp Drop in...

development projects in Assam often face prolonged protests and legal hurdles, leading to delays and higher costs. He said issues ranging from infrastructure expansion to major energy projects frequently encounter opposition, making it difficult for the state to maintain its development momentum.

Without naming any organisation, the Chief Minister alleged that certain groups consistently oppose government development initiatives, discouraging investors and creating uncertainty

around land acquisition. He stressed that attracting industries, promoting clean energy, advancing artificial intelligence and establishing world-class educational institutions are essential for Assam's future growth.

Highlighting the government's achievements, Sarma said more than 81,000 appointments have been made in the education sector over the past five years. He also credited the Central Government for supporting several transformative infrastructure projects, including the proposed Kaziranga Elevated Corridor and the Numaligarh-Gohpur tunnel, describing them as crucial to Assam's long-term development strategy.

The Chief Minister urged all stakeholders to support development initiatives, saying sustained economic growth, industrial expansion, modern education and improved infrastructure are essential for making Assam a stronger and more self-reliant economy.



# India Deepens Gulf Ties

## Focus on Energy Security and Regional Stability

Jan Jan Vichar

... New Delhi

External Affairs Minister Dr. S. Jaishankar's four-nation visit to the Gulf has reinforced India's strategic engagement with West Asia, with energy security, trade, investment, and regional stability emerging as the key pillars of discussion.

During his visits to Qatar, Kuwait, Bahrain, and Oman, Jaishankar held high-level meetings with political leaders and foreign ministers to strengthen bilateral ties and review cooperation across critical sectors. According to the Ministry of External Affairs, the discussions also focused on the evolving security situation in West Asia, underscoring India's commitment to peace, dialogue, and regional stability.

### Commission Summons 15 Police Personnel

**Ara:** In a major development in the Bharat Bhushan Tiwari encounter case, the Judicial Inquiry Commission has issued summons to 15 police personnel, including the Sub-Divisional Officer (SDO), the then Deputy Superintendent of Police (DSP), and the former Shahpur Station House Officer (SHO), directing them to appear before the commission on July 16 and 17.

The commission is examining the circumstances of the June 17 encounter in Bilauti village of Bhojpur district and has sought testimony from officials involved in the operation. As part of the ongoing investigation, police have also seized the service pistols of several officers, including the DSP's bodyguard, a sub-inspector, and an assistant sub-inspector, for forensic examination.



MEA spokesperson Randhir Jaiswal said energy security featured prominently in all the meetings, reflecting the Gulf's continued importance as India's primary energy partner. The leaders also exchanged views on regional developments and

explored ways to enhance cooperation in trade, investment, and people-to-people ties.

In Qatar, Jaishankar met Prime Minister and Foreign Minister Sheikh Mohammed bin Abdulrahman Al Thani, appreciating Doha's diplo-

matic efforts in regional mediation while reviewing bilateral cooperation. In Bahrain, he met King Hamad bin Isa Al Khalifa and senior leadership to expand cooperation in key sectors. In Oman, discussions focused on strengthening the India-Oman strategic partnership, with Jaishankar expressing gratitude for Muscat's support to Indian sailors during recent regional tensions.

The visit highlights India's growing diplomatic footprint in the Gulf at a time of geopolitical uncertainty. As one of India's most important economic and energy partners, the region remains central to New Delhi's foreign policy, with stronger engagement aimed at ensuring energy security, safeguarding Indian interests, and promoting stability across West Asia.

## Taslima Nasrin Returns Bengal Politics Heats Up

Jan Jan Vichar

... Kolkata

Controversial Bangladeshi author Taslima Nasrin is set to return to Kolkata on August 1, marking her first visit to the city in nearly 20 years. She will participate in a cultural and intellectual event at Rabindra Sadan, organized by the Secular Mission and the Human Rights and Bangladesh Freedom Fighters Foundation.

Her visit comes after the renewal of her Indian residence permit and follows a change in West Bengal's political landscape. Organizers have described the visit as a sign of a more open environment for free expression, while opposition voices have criticized the event, alleging that it is being used for political messaging.

Nasrin left Kolkata in 2007 after violent protests over her book *Dwikhandito* and concerns over law and order. Although she continued to stay in India with central government permission, she had not returned to Kolkata for nearly two decades.

Her scheduled appearance has once

again sparked debate over freedom of expression, cultural space, and the relationship between literature and politics. Supporters view her return as a symbol of intellectual freedom, while critics argue that



it risks deepening political and social divisions. With public interest growing ahead of the event, Nasrin's visit is expected to be closely watched, not only as a cultural occasion but also as a development with wider political significance in West Bengal.

### Indian Casualties Mount as US-Iran Conflict Escalates in Gulf

**New Delhi :** The continuing US-Iran conflict has taken a growing toll on Indian nationals working in the Gulf region. According to the Ministry of External Affairs (MEA), 13 Indians have been killed and three remain missing since the conflict intensified in March 2026.

The latest incident occurred after attacks on two commercial vessels in the Strait of Hormuz, where one Indian sailor was killed and 10 others were injured, including two in critical condition. India has lodged a strong protest with Iran over the attacks and reiterated its concern for the safety of Indian citizens and international shipping.

The MEA condemned attacks on commercial vessels and called for an immediate cessation of hostilities, urging all parties to resolve differences through dialogue and diplomacy.

The escalating conflict has also disrupted global energy markets, with crude oil prices reportedly rising sharply amid fears of renewed fighting. Indian authorities are closely monitoring the safety of 148 Indian sailors aboard seven India-flagged vessels currently operating in the Persian Gulf.

With tensions threatening one of the world's busiest energy corridors, New Delhi continues to prioritize the safety of Indian nationals while advocating for stability, freedom of navigation, and peaceful resolution of the crisis.



## EDITORIAL

**Let Politics Answer**

The conviction of former AAP councillor Tahir Hussain in the murder of Intelligence Bureau officer Ankit Sharma marks a significant legal milestone in one of the most disturbing cases linked to the 2020 Delhi riots. While the quantum of punishment is yet to be decided, the court's verdict reinforces an essential democratic principle: no individual is above the law.

However, this judgment raises a larger and equally uncomfortable question. What about the political leaders who publicly defended or attempted to shield an accused facing such grave allegations? In

a healthy democracy, accountability cannot end with the convicted individual. Political responsibility must also be examined.

The murder of Ankit Sharma was not merely another criminal case. It became a symbol of the human cost of communal violence. His family waited years for justice while the legal process ran its course. The court has now delivered its findings based on the evidence presented before it. Those findings deserve respect, regardless of political affiliation.

Political parties have every right to defend constitutional principles, due process, and the presumption of innocence before a verdict. But there is a clear distinction between defending legal rights and

creating a political shield around an accused in a case of exceptional gravity. When political loyalty begins to overshadow moral responsibility, public trust in democratic institutions suffers.

The lesson from this verdict extends beyond one party or one individual. Every political formation must remember that temporary electoral calculations cannot outweigh justice. Leaders who rushed to defend the accused before the judicial process reached its conclusion owe the public an explanation.

Justice is complete only when the guilty are punished and when politics learns that no vote bank, ideology, or partisan interest is greater than the rule of law.

# Arranged Marriage Needs an 'Upgrade'

Jan Jan Vichar

...Meghna Pant

For generations, Indian parents have told their daughters: Study hard, dream big, and make something of your life. But as soon as marriageable age arrives, that message often changes. Suddenly, the expectation becomes: Learn to compromise.

I have seen this script play out countless times.

Many brilliant young women who aspired to become doctors, entrepreneurs, artists, or academics seemed to disappear after college-sometimes even before completing their education. They got married. Careers were no longer seen as essential. Financial independence became optional. Their ambitions were neatly folded away, almost as if packed into a designer wedding lehenga. Their identities were reduced to three words: wife, mother, and daughter-in-law.

To be clear, this is not an argument against arranged marriages. Millions of arranged marriages in In-

dia are happy, loving, and successful. The real issue is with a version of arranged marriage that mistakes obedience for virtue, compliance for consent, and duty for desire.

India has undergone remarkable transformation over the past few decades. Women are topping university merit lists, leading corporations, commanding fighter squadrons, building unicorn startups, and arguing landmark cases before the Supreme Court. We trust them with positions of immense responsibility, yet we still hesitate to trust them with one of the most personal decisions of their lives-the choice of a life partner.

The questions remain the same: What will people say? Is the boy from the right community? Will the girl be able to adjust? But how often do we ask a woman what she truly wants?

Consider the recent case of Siya Goyal. Nothing can justify the crime she is accused of. However, the incident has forced many of us to confront some deeply uncomfortable questions. What happens

when women feel they have little or no control over one of the biggest decisions of their lives? What are the emotional consequences of living a life largely designed to fulfill family expectations rather than personal aspirations?

We cannot afford to wait until a tragedy occurs before asking these questions. We need to ask them before marriages are arranged.

Today's generation of women understands that consent is not merely saying 'yes' on the wedding day. Consent also means having the freedom to say 'no' without emotional coercion, social isolation, or lifelong guilt. It means having the freedom to decide whether to marry, when to marry, and whom to marry. And no, these are not Western ideas-they are fundamentally human ideas.

The irony is striking. We invest years in educating our daughters, encouraging them to think independently and compete at the highest levels. Yet, when marriage enters the conversation, independent thinking is suddenly viewed as re-

bellion.

The problem is not arranged marriage itself. The problem is that we have modernized almost every institution except marriage. Marriage should not be a reward for obedience. It should be the outcome of a free and informed choice.

Families can still introduce potential partners. Society can continue to celebrate its traditions. Culture can remain intact. But when a tradition begins to suppress individual freedom instead of enriching it, that tradition needs to evolve.

The strongest relationships are not those sustained by family pressure or social obligation. They are the ones built on two people freely choosing each other.

The issue is not arranged marriage itself. The issue is that while society has modernized nearly every other aspect of life, the institution of marriage has often remained unchanged. Marriage should never be merely a reward for obedience; it should be the result of an individual's free and independent choice.

## Global Honours for PM Modi Reflect India's Rising Stature

Prime Minister Narendra Modi receiving Indonesia's highest civilian honour, the Bintang Adipurna, is another indication of India's growing diplomatic influence. Since 2016, he has received 34 international honours from countries across Asia, Africa, Europe, and the Americas-the highest number for any Indian Prime Minister.

Some sections of the interna-

tional media have questioned these recognitions. However, such honours are sovereign decisions made by independent nations and reflect their assessment of India's expanding global role.

Over the past decade, India has strengthened its international standing through initiatives such as Vaccine Maitri, humanitarian relief missions, promotion of International Yoga Day, the global adoption of UPI, and the Indian

Navy's maritime security and anti-piracy operations. These efforts have enhanced India's reputation as a reliable and responsible partner.

Criticism and debate are essential in a democracy, but dismissing honours conferred by multiple countries without credible evidence overlooks the independent judgment of those nations.

International awards alone do not define a country's success. Yet

when governments across diverse regions choose to honour India's leadership, they acknowledge the country's growing influence in diplomacy, development, humanitarian assistance, and global cooperation.

The value of these honours lies less in the medals themselves and more in what they represent-India's emergence as a confident and increasingly influential global power.



# Guwahati Rath Yatra Festival

Jan Jan Vichar  
...Guwahati

Devotees across Guwahati are preparing to celebrate the sacred Jagannath Rath Yatra on July 16, 2026 (Thursday). The grand festival is expected to be marked with religious fervour, devotional music and community participation from all districts of Assam.

Similar celebrations will take place across India on the same day, coinciding with the world-famous Rath Yatra in Puri, Odisha.

In fact, the annual chariot festival commemorates the ceremonial journey of Lord Jagannath, accompanied by Lord Balabhadra and Goddess Subhadra, from their temple to the Gundicha Temple. The

festival symbolises the Lord's outreach to humanity, conveying the timeless message of equality, compassion and universal brotherhood.

In Guwahati, the festival has evolved into a major spiritual and cultural event, attracting thousands of devotees from Assam and neighbouring states. Colourfully decorated chariots, Harinam Sankirtan, devotional singing, cultural performances, prasadam distribution and volunteer services are expected to create a vibrant atmosphere throughout the city.

Several Vaishnava organisations, including the Hare Krishna Mandir, North Guwahati, and ISKCON have announced preparations for the Rath Yatra celebrations on July 16. These temples have



invited devotees and the general public to participate in the procession and receive the blessings of Lord Jagannath.

Organisers are coordinating with local authorities to ensure smooth traffic movement, public safety, medical assistance and crowd management. The festival is expected to bring together people from diverse communities,

reflecting Assam's long tradition of religious harmony and cultural inclusiveness. Devotees will participate by pulling the sacred chariot, chanting the holy names of Lord Krishna and engaging in acts of charity and community service. With devotional enthusiasm building across the city, Guwahati is set to once again witness a grand celebration where faith, culture and community

converge, transforming the streets into a living expression of devotion to the "Lord of the Universe."

Terming the annual Rath Yatra of Lord Jagannath in Puri as a 'national festival', Odisha Chief Minister Mohan Charan Majhi on Monday appealed for proper coordination between administration, servitors and devotees to make the event a mega success.

## Jagannath in AI Age: Faith Meets Technology

Jan Jan Vichar  
...Guwahati

■ The 10-day long annual festival of chariots is starting from July 16, 2026.

■ It is celebrated throughout the world by the faithfuls of Lord Jagannath, Baladev and Subhadra.

As artificial intelligence (AI) reshapes economies, education, healthcare, governance and communication across the globe, one of India's oldest spiritual traditions continues to demonstrate an enduring truth: technology may transform the way people live, but faith continues to shape why they live.

**The Deity in a Digital World:** Lord Jagannath, revered as the 'Lord of the Universe', has inspired generations through values of inclusiveness, compassion and equality. His annual Rath Yatra is among the world's largest religious gatherings, attracting millions of pilgrims and visitors every

year. The festival symbolises the Lord coming out of the temple to bless all humanity, irrespective of caste, creed, nationality or social status.

**AI as a Silent Sevak:** Artificial intelligence is increasingly becoming an invisible volunteer—a 'digital sevak'—during large religious gatherings.

Authorities now employ intelligent surveillance systems capable of monitoring crowd density in real time. Predictive analytics help estimate congestion at major entry points, allowing officials to redirect pilgrims before bottlenecks develop. Emergency response teams receive AI-generated alerts that improve coordination and reduce response times.

Navigation apps guide devotees through alternative routes, while multilingual AI assistants answer

frequently asked questions regarding rituals, accommodation, transportation and festival schedules.

Far from replacing human service, AI is strengthening it.

**Global Devotion Beyond Geography:** For millions of devotees unable to visit Puri due to age,

Africa and Australia to participate in spiritual celebrations almost instantaneously.

**Preserving Heritage Through AI:** Beyond festival management, AI is opening new possibilities for preserving Jagannath heritage. Researchers are digitising ancient palm-leaf manuscripts, temple inscriptions and rare Odia literature. Machine learning tools help restore damaged historical documents, identify fading scripts and create searchable digital archives for future generations.

Three-dimensional imaging technologies are documenting temple architecture with unprecedented precision, ensuring that invaluable cultural heritage can be preserved against natural disasters and the passage of time.

**Ethical Questions:**

The AI age also raises important philosophical questions. Can algorithms understand devotion? Can machines experience compassion? Can artificial intelligence interpret spiritual wisdom without human consciousness?

Religious scholars suggest that while AI can organise information and improve services, it cannot replace faith, surrender, moral responsibility or divine experience. Technology may guide the journey, but spirituality continues to guide the traveller. The Jagannath tradition itself offers an answer: knowledge should always serve humanity rather than dominate it.

**Lessons from Lord Jagannath for the AI Generation:** The Jagannath philosophy carries remarkable relevance in the twenty-first century. It teaches inclusiveness in an era of digital divides. It promotes humility in an age increasingly fascinated with technological power.





# The Eternal Journey of Faith

Jan Jan Vichar  
... Deben Apat

Every year, millions of devotees gather along the Grand Road (Bada Danda) of Puri in Odisha to witness one of the world's oldest and largest religious processions—the Jagannath Rath Yatra. More than a festival, the Rath Yatra is a celebration of faith, equality, devotion and the enduring bond between the divine and humanity.

The sight of three towering, beautifully decorated wooden chariots carrying Lord Jagannath, Lord Balabhadra and Devi Subhadra through the streets transforms Puri into a sea of devotion. The festival attracts pilgrims from every corner of India and abroad, making it one of Hinduism's most revered annual events.

## The Meaning Behind the Divine Journey

Unlike most temple festivals where devotees visit the deity, Jagannath Rath Yatra is unique because the deities come out of the temple to meet the people. This symbolic journey reflects the belief that God belongs to everyone, irrespective of caste, religion, language or social status.

The deities travel from the Jagannath Temple to the Gundicha Temple, believed to be the birthplace of Lord Jagannath, where they stay for several days before returning in the Bahuda Yatra.

For devotees, pulling the sacred chariots is considered an act of immense spiritual merit and humility. The festival reminds people that everyone is equal before the Almighty.

## A Tradition

### Spanning Centuries

The origins of the Jagannath Temple date back to the 12th century during the reign of King Anantavarman Chodaganga Deva. Since then, the Rath

## Jagannath Rath Yatra and It's Timeless Message



Yatra has evolved into one of India's most iconic cultural and religious traditions.

One of its most fascinating aspects is that new chariots are constructed every year using specially selected wood. Skilled artisans follow age-old rituals and traditional craftsmanship passed down through generations.

Each chariot has its own distinctive identity:

### Nandighosha

Chariot of Lord Jagannath

### Taladhwaaja

Chariot of Lord Balabhadra

### Darpadalana

### (Devadalana)

Chariot of Devi Subhadra

The construction itself is regarded as a sacred ritual rather than ordinary craftsmanship.

## The Rituals that Inspire Millions

The festival begins with Snana Purnima, when the deities are ceremonially bathed with 108 pitchers of holy water. Following the ritual, the deities are believed to fall ill and remain away from public view during the Anasara period.

When they reappear during Nava Jaubana Darshan, devotees believe

the deities have regained their youthful appearance before embarking on the grand chariot procession.

The return journey, known as Bahuda Yatra, concludes with the famous Suna Besha, during which the deities are adorned with magnificent gold ornaments, followed by Niladri Bijje, marking their return to the sanctum.

## A Festival Beyond Odisha

Although Puri remains the spiritual heart of the festival, Jagannath Rath Yatra is celebrated across India and in many countries around the world.

In Assam, temples and cultural organisations organise colourful Rath Yatra processions in Guwahati, Barpeta, Nagaon, Silchar, Dibrugarh and several other towns. Thousands of devotees participate in pulling the chariots, singing devotional songs and distributing prasadam.

The International Society for Krishna Consciousness (ISKCON) has also helped popularise the Rath Yatra globally, with celebrations held in cities such as London, New York,

Toronto, Sydney, Johannesburg and Singapore.

## The Universal Message

The Jagannath Rath Yatra is much more than a religious procession. It carries timeless lessons that remain relevant in today's world:

**Equality:** Every devotee, regardless of back-

ground, has the privilege of pulling the chariot.

**Unity:** People from different communities come together in a spirit of devotion and service.

**Compassion:** The Lord stepping out of the temple symbolises divine grace reaching every individual.

**Humility:** Even the King of Puri traditionally performs the 'Chhera Pahanra' ritual by sweeping the chariots with a golden broom, signifying that no one is above service.

## Faith in Motion

In an age of rapid technological change and fast-paced lifestyles, the Jagannath Rath Yatra continues to remind humanity of values that never grow old—faith, service, equality and togetherness. As the massive wooden chariots roll through the streets amid the chants of 'Jai Jagannath', they carry more than sacred idols. They carry centuries of tradition, the hopes of millions and a timeless message that the path to the Divine is open to all.

**Jai Jagannath!**

**D.S. ASSOCIATES**  
 TAX CONSULTANTS

TRUSTED ADVISORS

ONE-STOP SOLUTION

**ALL YOUR TAX & FINANCE  
NEEDS UNDER ONE ROOF**

Expert, reliable and timely solutions for individuals, businesses & startups — handled by experienced professionals you can trust.

OUR SERVICES

✓ Income Tax Returns  
 ✓ Audit  
 ✓ Loans  
 ✓ Company Registration  
 ✓ Trademark Registration  
 ✓ Subsidy Related Works

✓ GST Registration & Filing  
 ✓ Accounting & Book Keeping  
 ✓ Insurance  
 ✓ Import & Export Compliance  
 ✓ FSSAI Registration  
 ✓ Documentation Services

...AND MANY MORE SERVICES

CONTACT US TODAY

E-Mail : dssalestax@gmail.com

Dhaneshwar Choudhary  
 70026 82705

Subhash Choudhary  
 84728 20656